University of Rajasthan
Jaipur

SYLLABUS

M.A. Hindi

(Semester Scheme)

I & II Semester 2025-26
III & IV Semester 2026-27

एम.ए (हिन्दी) – प्रथम सेमेस्टर
कम्पलसरी कोर कोर्स
HIN-101 : प्राचीन काव्य

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 100

निर्धारित पाठ –

1. संक्षिप्त पृथ्वीराम रासो चन्दबरदाई	– सं. हजारी प्रसाद द्विवेदी	– शशिव्रता विवाह प्रस्ताव आरम्भिक 50 छन्द
2. विद्यापति	– सं. शिवप्रसाद सिंह	– पद संख्या 8,10,11,16,19,26, 36,40,47,48
3. ढोला मारूरादूहा : कुशल लाभ	– सं. डॉ. शम्भूसिंह मनोहर	– दोहा संख्या 1 से 25 तक
4. गोरखवाणी : गोरखनाथ	– सं. पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल	– सबदी खण्ड के आरम्भिक– 15 छन्द पद खण्ड से आरम्भिक 5 छन्द

अंक विभाजन–

चार व्याख्या – प्रत्येक इकाई से एक (आन्तरिक विकल्प देय) $10 \times 4 = 40$

चार आलोचनात्मक प्रश्न – प्रत्येक इकाई से एक (आन्तरिक विकल्प देय) $15 \times 4 = 60$

अनुशंसित ग्रंथ–

1. हिन्दी साहित्य का आदिकाल – हजारी प्रसाद द्विवेदी
2. हिन्दी साहित्य की भूमिका – हजारी प्रसाद द्विवेदी
3. आदिकालीन हिन्दी साहित्य – डॉ. शम्भूनाथ पाण्डेय
4. चंदबरदाई – शांता सिंह
5. पृथ्वीराज रासो : भाषा और साहित्य – डॉ. नामवर सिंह
6. पृथ्वीराज रासउ – सं. माताप्रसाद गुप्त
7. विद्यापति – डॉ. शिवप्रसाद सिंह
8. विद्यापति – डॉ. आनन्द प्रकाश दीक्षित
9. गोरखनाथ – नागेन्द्रनाथ उपाध्याय

अधिगम उद्देश्य

1. हिन्दी साहित्य के आदिकाल के काव्य से परिचित होना।
2. पृथ्वीराज रासो के पाठ के जरिए रासो काव्य की विशेषता आदि का अध्ययन करना।
3. विद्यापति के काव्य की विशेषताओं का अध्ययन करना।
4. ढोलामारू रा दूहा के चयनित पाठ से आदिकाल के लोक काव्य की विशेषताओं का अध्ययन।
5. गोरखवाणी के अध्ययन से निर्गुण संत काव्य की आधारभूमि का ज्ञान प्रकरण।

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

पाठ्यक्रम प्रतिफल

1. हिन्दी साहित्य के आदिकाल के काव्य से विद्यार्थी परिचित हो सकेगें।
2. रासो काव्य की प्रमुख विशेषताओं का अध्ययन विद्यार्थी पृथ्वीराज रासो के चयनित पाठ के आधार पर कर सकेंगे।
3. विद्यापति पदावली के चयनित पाठ से विद्यार्थी विद्यापति की काव्यगत विशेषताओं का परिचय प्राप्त कर सकेंगे
4. आदिकाल के लोक काव्य की विशेषताओं का अध्ययन 'ढोला मारू रा दूहा के चयनित अंश से किया जा सकेगा।
5. गोरखवाणी के अध्ययन से विद्यार्थी गोरखनाथ की साधना विचार और पद्धति के साथ–साथ निर्गुण संत काव्य की आधारभूमि को समझ सकेंगे।

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

एम.ए (हिन्दी) – प्रथम सेमेस्टर

कम्पलसरी कोर कोर्स

HIN-102 : हिन्दी साहित्य का इतिहास – आदिकाल

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 100

इकाई 1. साहित्य का इतिहास दर्शन, साहित्येतिहास और साहित्यालोचन, हिन्दी साहित्येतिहास लेखन की परम्परा, हिन्दी साहित्येतिहास लेखन की समस्याएं

इकाई 2. हिन्दी साहित्य का आदिकाल – सीमांकन, नामकरण, परिवेश
आदिकाल के अध्ययन की समस्याएं – साहित्यिकता, भाषा एवं प्रामाणिकता के प्रश्न

इकाई 3. आदिकालीन साहित्य की प्रमुख धाराएं
क. सिद्ध साहित्य
ख. नाथ साहित्य
ग. जैन साहित्य
घ. रासो साहित्य

इकाई 4. आदिकालीन साहित्य के अन्य पक्ष
क. लौकिक साहित्य
ख. गद्य साहित्य
ग. आदिकाल की उपलब्धियां (भाषा रूप और सम्प्रेषण क्षमता, कथ्य और शिल्प)

अंक विभाजन–

कुल पाँच प्रश्न
प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न – चार प्रश्न (आन्तरिक विकल्प देय) $20 \times 4 = 80$
अंतिम प्रश्न टिप्पणीपरक होगा – सामाजिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक वैशिष्ट्य केन्द्रित दो टिप्पणियाँ (आन्तरिक विकल्प देय) $10 \times 2 = 20$

अनुशंसित ग्रंथ–

1. राम चन्द्र शुक्ल – हिन्दी साहित्य का इतिहासा, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
2. हजारी प्रसाद द्विवेदी – हिन्दी साहित्य की भूमिका, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
3. हजारी प्रसाद द्विवेदी – हिन्दी साहित्यः उद्‌भव और विकास, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
4. हजारी प्रसाद द्विवेदी – हिन्दी साहित्य का आदिकाल, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
5. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र – हिन्दी साहित्य का अतीत – भाग 1. वाणी प्रकाशन, दिल्ली
6. नगेन्द्र (सं.) – हिन्दी साहित्य का इतिहास, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
7. रामस्वरूप चतुर्वेदी – हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास, लोकभारती, प्रकाशन इलाहाबाद
8. नलिन विलोचन शर्मा – साहित्य का इतिहास दर्शन, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना
9. बच्चन सिंह – हिन्दी साहित्य कर दूसरा इतिहास, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
10. शंभुनाथ पाण्डेय – आदिकालीन हिन्दी साहित्य
11. नागेन्द्रनाथ उपाध्याय – गोरखनाथ : नाथ सम्प्रदाय के परिप्रेक्ष्य में
12. नागेन्द्रनाथ उपाध्याय – बौद्ध कापालिक साधना और साहित्य

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

अधिगम उद्देश्यः–

1. इतिहास के आदिकाल के राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक परिवेश का ज्ञान करना।
2. आदिकाल के साहित्यिक काव्य रूपों को जानना।
3. आदिकाल की साहित्यिक धाराओं का सामान्य ज्ञान प्राप्त करना।
4. हिन्दी साहित्य के इतिहास के प्रारम्भ को समझाना।

पाठ्यक्रम प्रतिफलः–

1. साहित्येतिहासिक दर्शन, परम्परा और चुनौतियों को जान सकेंगे।
2. हिन्दी साहित्य के आदिकाल के अध्ययन के प्रमुख बिन्दुओं को समझ सकेंगे
3. आदिकाल की प्रमुख धाराओ ंका परिचय प्राप्त कर सकेगें।
4. आदिकाल के गद्य और लोक साहित्य को जान सकेंगे।

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

एम.ए (हिन्दी) – प्रथम सेमेस्टर

कम्पलसरी कोर कोर्स

HIN-103 : भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 100

इकाई 1. क. भाषा : परिभाषा, विशेषताएँ, भाषा और बोली, भाषा परिवर्तन के कारण
ख. भाषाविज्ञान : परिभाषा, अंग, भाषा विज्ञान का ज्ञान की अन्य शाखाओं के संबंध

इकाई 2. क. स्वनिमविज्ञान : स्वन की परिभाषा वागीन्द्रियाँ, स्वनों का वर्गीकरण – स्थान और प्रयत्न के आधार पर, स्वन परिवर्तन के कारण एवं दिशाएँ
ख. रूपमिविज्ञान : शब्द और रूप (पद), पद विभाग – नाम, आख्यात, उपसर्ग और निपात व्याकरणिक कोटियाँ – लिंग, वचन, पुरुष, कारक, पद परिवर्तन के कारण

इकाई 3. क. वाक्यविज्ञान : वाक्य की परिभाषा, वाक्य के अनिवार्य तत्व, वाक्य के प्रकार, वाक्य परिवर्तन के कारण
ख. अर्थविज्ञान : शब्द और अर्थ का संबंध, अर्थ परिवर्तन के कारण और दिशाऐं

इकाई 4. क. हिन्दी भाषा का उद्भव और विकास
ख. हिन्दी की उपभाषाएं एवं बोलियां
घ. राष्ट्रभाषा, राजभाषा एवं सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी
ग. देवनागरी लिपि की विशेषताएं और मानकीरण, हिन्दी की मानक वर्गमाला

अंक विभाजन–

कुल पाँच प्रश्न

प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न – चार प्रश्न (आन्तरिक विकल्प देय) $20 \times 4 = 80$

अंतिम प्रश्न टिप्पणीपरक होगा – दो टिप्पणियाँ (आन्तरिक विकल्प देय) $10 \times 2 = 20$

अनुशंसित ग्रंथ–

1. भाषाविज्ञान की भुमिका – देवेन्द्र नाथ शर्मा, राधाकृष्णन प्रकाशन, दिल्ली
2. भाषाविज्ञान – भोलानाथ तिवारी, किताब महल, इलाहाबाद
3. सामान्य भाषाविज्ञान बाबूराम सक्सेना, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
4. हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास – उदयनारायण तिवारी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
5. भाषा और समाज – रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
6. पुरानी हिन्दी – चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, काशी नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी
7. हिन्दी शब्दानुशासन – किशोरीदास वाजपेयी, काशी नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी
8. भारतीय आर्य भाषा और हिन्दी – सुनीति कुमार चटर्जी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
9. भाषाविज्ञान एवं भाषा शास्त्र – कपिल देव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
10. हिन्दी भाषा विकास और स्वरूप – कैलाश चन्द्र भाटिया, ग्रंथ अकादमी, नई दिल्ली

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

अधिगम उद्देश्यः–

1. भाषा विज्ञान व उसके विविध अंगों और शाखाओं को स्पष्ट करना।
2. भाषा–व्यवस्था, संरचना, भाषिक प्रकार्य तथा उसकी विशेषताओं को स्पष्ट करना।
3. स्वनिमविज्ञान, रूपविज्ञान, वाक्यविज्ञान एवं अर्थविज्ञान की परिभाषा व उनके भेदों को स्पष्ट करना।
4. हिन्दी भाषा का उद्भव और विकास हिन्दी की उपभाषाएँ एवं बोलियाँ, राजभाषा, राष्ट्रभाषा एवं संपर्क भाषा तथा देवनागरी लिपि का मानकीकरण एवं मानक वर्णमाला का परिचय कराना।

पाठ्यक्रम प्रतिफलः–

1. विद्यार्थी भाषा, भाषा व्यवस्था, संरचना, भाषिक प्रकार्य तथा उसकी विशेषताओं की सामान्य जानकारी प्राप्त कर सकेंगे
2. विद्यार्थी भाषाविज्ञान की परिभाषा उसके प्रमुख अंग ओर भाषाविज्ञान की ज्ञान की अन्य शाखाओं से संबंध को समझ सकेंगे।
3. विद्यार्थीं हिन्दी की ध्वनियों तथा वर्गीकरण और ध्वनि परिवर्तन के कारणों को समझ सकेंगे
4. रूपिमविज्ञान वाक्यविज्ञान एवं अर्थविज्ञान की परिभाषा एवं उनकी उपयोगिता का ज्ञान प्राप्त करेंगे।
5. विद्यार्थीं हिन्दी भाषा के उद्भव और विकास हिन्दी की उपभाषाएँ, बोलियाँ, राष्ट्रभाषा, राजभाषा, संषर्क भाषा एवं देवनागरी लिपि एवं हिन्दी की मानक वर्णमाला का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

एम.ए (हिन्दी) – प्रथम सेमेस्टर
इलेक्टिव कोर कोर्स (वैकल्पिक प्रश्नपत्र)
HIN A01 – A06 में से किन्हीं 3 का चयन करें
HIN-A01 : अपभ्रंश भाषा और साहित्य

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 100

इकाई 1. अपभ्रंश भाषा का विकास तथा उसकी विशेषताएँ, अपभ्रंश, अवहट्ट और पुरानी हिन्दी
इकाई 2. अपभ्रंश साहित्य का इतिहास
इकाई 3. अपभ्रंश साहित्य की सामान्य विशेषताएँ
इकाई 4. निर्धारित पाठ–

क. अपभ्रंश काव्य सौरभ – सं. कमल चंद सोगानी, (पउम चरिउ – स्वयंभू)
पाठ – 3, 27/14 से 28/2 तक

ख. हिन्दी काव्यधारा – सं. राहुल सांकृत्यायन, (पाखण्ड खण्डन – रामसिंह)
कुल 17 दोहे

ग. हिन्दी काव्यधारा – सं. राहुल सांकृत्यायन, (प्रोषित पतिका का संदेश)
आरम्भिक 10 छंद

घ. कीर्तिलता : द्वितीय पल्लव

अंक विभाजन–

कुल पाँच प्रश्न

निर्धारित पाठ्य खण्ड से कुल चार व्याख्या – प्रत्येक से एक (आन्तरिक विकल्प देय)

$10 \times 4 = 40$

तीन आलोचनात्मक प्रश्न – प्रथम तीन इकाइयों में प्रत्येक से एक (आन्तरिक विकल्प देय)

$20 \times 3 = 60$

अनुशंसित ग्रंथ–

1. हिन्दी काव्यधारा – राहुल सांकृत्यायन
2. हिन्दी के विकास में अपभ्रंश का योग – डॉ. नामवर सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
3. अपभ्रंश भाषा का अध्ययन – डॉ. वीरेन्द्र श्रीवास्तव
4. अपभ्रंश साहित्य – हरिवंश कोछड़
5. प्राकृत और अपभ्रंश साहित्य तथा उनका हिन्दी साहित्य पर प्रभाव – डॉ. रामसिंह तोमर, हिन्दी परिषद् प्रकाशन, इलाहाबाद
6. अपभ्रंश भाषा और साहित्य – राजमणि शर्मा, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली
7. अपभ्रंश और अवहट्ठ : एक अन्तर्यात्रा – शम्भुनाथ पाण्डेय
8. अपभ्रंश भाषा साहित्य की शोध–प्रवृत्तियाँ – देवेन्द्र कुमार, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

अधिगम उद्देश्यः–

1. अपभ्रंश भाषा एवं साहित्य की विशेषता एवं महत्ता को स्पष्ट करना।
2. अपभ्रंश साहित्य के प्रमुख कवियों स्वयंभू रामसिंह अब्दुर्रहमान विद्यापति के पाठ को समझाना।
3. अपभ्रंश साहित्य से हिन्दी के विकास को स्पष्ट करना।

पाठ्यक्रम प्रतिफलः–

1. विद्यार्थी अपभ्रंश भाषा के उद्भव एवं विकास को समझ सकेंगे।
2. विद्यार्थी अपभ्रंश भाषा के कवियों स्वयंभू के पउम चरिउ, रामसिंह के पाहुड़ दोहा– पाखंड खंडन तथा अब्दुर्रहमान के संदेश राशक के प्रोसित पत्रिका का संदेश पाठ् को समझ सकेंगे।
3. विद्यार्थी अपभ्रंश साहित्य के अन्य कवियों के पाठ एवं योगदान को समझ सकेंगे।

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

एम.ए (हिन्दी) – प्रथम सेमेस्टर
इलेक्टिव कोर कोर्स (वैकल्पिक प्रश्नपत्र)
HIN A01 – A06 में से किन्हीं 3 का चयन करें
HIN-A02 : सूफी साहित्य

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 100

इकाई 1. सूफी मत का उद्‌भव और विकास, सूफी मत का सैद्वान्तिक विश्लेषण

इकाई 2. भारत में सूफी मत का विकास एवं विविध सम्प्रदाय

इकाई 3. हिन्दी का सूफी साहित्य – सामान्य विशेषताएं

इकाई 4. निर्धारित पाठ–

क. जायसी ग्रंथावली – सं. रामचन्द्र शुक्ल, (पद्‌मावत – नागमती वियोग खण्ड)

ख. मधुमालती (मंझन) – सं. माता प्रसाद गुप्त, 316 से 330 तक

ग. अमीर खुसरो – सं. भोलानाथ तिवारी

गीत –
1. मेरा जोवना नवेलरा भयां है गुलाल.....
2. बहुत रही बाबुल कर दुलहिन, चल तेरे पी ने बुलाई
3. दईया री मोहें भिजोकारी
4. अम्मा मेरे बाबा को भेजो कि सावन आया
5. जो पिया सावन कह गये अजहुँ न आए स्वामी हो

कव्वाली –
1. छापा तिलक तज दीन्ही रे तो से नैना मिला के
2. बहुत दिन बीते पिया को देखे

सूफी दोहे –
1. गोरी सोवे सेज पर मुख पर.....
2. श्याम सेत गोरी लिये जनमत भई अतीत.....
3. खुसरो रैन सुहाग की जागी पी के संग.....
4. वो गए बालम वो गये नदियां पार.....
5. देख मैं अपने हाल को रोउ जार–ओ–जार.....
6. चकवा चकवी दो जाने उनको मारे न कोय .....
7. सेज सूनी देख के रोउ दिन रैन.....
8. ताजी खूटा देश में कब से पड़ी पुकार.....

अंक विभाजन–

आरम्भिक तीन इकाईयों से एक–एक आलोचनात्मक प्रश्न (आन्तरिक विकल्प देय) 20×3=60

चतुर्थ इकाई से 4 व्याख्याएं – प्रत्येक से न्यूनतम एक (आन्तरिक विकल्प देय) 10×4=40

अनुशंसित ग्रंथ–

1. जायसी ग्रंथावली – सं. रामचन्द्र शुक्ल
2. पद्‌मावत – सं. वासुदेवशरण अग्रवाल
3. जायसी – विजयदेवनारायण साही
4. मधुमालती – डॉ. शिवगोपाल मिश्र
5. हिन्दी सूफी काव्य की भूमिका – रामपूजन तिवारी
6. जायसी परवती हिन्दी सूफी कवि और काव्य – डॉ. सरला शुक्ल
7. सूफी मत – डॉ. कन्हैया सिंह
8. मध्ययुगीन प्रेमाख्यान – डॉ. श्याम मनोहर पाण्डेय
9. अमीर खुसरो का हिन्दी काव्य – गोपीचन्द नारंग
10. सूफी मत और हिन्दी सूफी काव्य – डॉ. नरेश

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

अधिगम उद्देश्यः–

1. सूफी मत के उदय और विकास का परिचय
2. सूफी सिद्धान्तों का सामान्य परिचय
3. भारत में सूफी मत के विभिन्न संप्रदायों का परिचय
4. हिन्दी के सूफी साहित्य के विकास विशेषताओं का परिचय
5. जायसी मंझन और अमीर खुसरों के काव्य का अवबोध (सूफी साहितय के प्रतिनिधि रचनाकारों के रूप में)

पाठ्यक्रम प्रतिफलः–

1. विद्यार्थी सूफी मत के उदय और विकास का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
2. विद्यार्थी सूफी सिव्द्धान्तों का परिचय प्राप्त कर सूफी साहित्य की समझ को बेहतर बना सकेगें।
3. भारत में सूफ़ीमत के विकास और विभिन्न संप्रदायों का परिचय प्राप्त कर विद्यार्थी भक्तिकाल की निर्गुण प्रेममार्गी काव्यधारा को समझ सकेंगे।
4. हिन्दी के सूफ़ी साहित्य की विशेषताओं का ज्ञान प्राप्त कर उनके प्रतिनिधि कवियों के रूप में जायसी, मंझन और अमीर खुसरों के काव्य से परिचित हो सकेंगे।

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

इलेक्टिव कोर कोर्स (वैकल्पिक प्रश्नपत्र)

HIN A01 – A06 में से किन्हीं 3 का चयन करें

HIN-A03 : लोक साहित्य

इकाई 1. लोक संस्कृति की अवधारणा
लोक संस्कृति और साहित्य
लोक संस्कृति का अन्य सामाजिक विज्ञानों से संबंध
लोक संस्कृति के अध्ययन की समस्याएं

इकाई 2. लोक साहित्य के प्रमुख रूपों का वर्गीकरण
लोकगीत – संस्कारगीत, व्रतगीत, श्रमगीत, ऋतुगीत
लोकगाथा एवं लोककथा
लोकनृत्य एवं लोकनाट्य

इकाई 3. लोकनाट्य – रामलीला, रासलीला, कीर्तनियां, स्वांग, यक्षगान, विदेशिया, भांड, तमाशा, नौटंकी

इकाई 4. हिन्दी लोक नाट्य की परम्परा
हिन्दी नाटक एवं रंगमंच पर लोक नाट्यों का प्रभाव

अंक विभाजन–

कुल पाँच प्रश्न

प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न – चार प्रश्न (आन्तरिक विकल्प देय) $20 \times 4 = 80$

अंतिम प्रश्न टिप्पणीपरक होगा – दो टिप्पणियाँ (आन्तरिक विकल्प देय) $10 \times 2 = 20$

अनुशंसित ग्रंथ–

1. बद्रीनारायण – लोकसंस्कृति में राष्ट्रवाद, राधाकृष्ण, प्रकाशन , नई दिल्ली
2. श्यामचरण दुबे – परम्परा, इतिहास बोध और संस्कृति, राधाकृष्णन, नई दिल्ली संक्रमण की पीड़ा वाणी प्रकाशन नई दिल्ली
3. डॉ. सत्येन्द्र – लोक साहित्य विज्ञान, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर
4. अर्नाल्ड हाउजर – कला का इतिहास दर्शन, ग्रंथ शिल्पी, नई दिल्ली
5. कुंदनलाल उप्रेती – लाक साहित्य के प्रतिमान, भारत प्रकाशन मंदिर अलीगढ़
6. डॉ. श्रीराम शर्मा – लोक साहित्य सिंद्धान्त प्रयोग, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा
7. डॉ. रवीन्द्र भ्रमर – लोक साहित्य की भूमिका, साहित्य सदन कानपुर
8. डॉ. दुर्गा भागवत – भारतीय लोक साहित्य की रूपरेखा, विभु प्रकाशन दिल्ली
9. दिनेश्वर प्रसाद – लोक साहित्य और संस्कृति, लोकभारती इलाहाबाद
10. लोकावलोकन – विजय वर्मा, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर
11. सम्मेलन पत्रिका – लोक संस्कृति विशेषांक, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद
12. सापेक्ष – लोक साहित्य विशेषांक, सं. महावीर अग्रवाल, दुर्ग

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

अधिगम उद्देश्यः–

1. लोक साहित्य और लोक संस्कृति की अवधारणा का परिचय देना।
2. लोक साहित्य का अन्य सामाजिक विज्ञान से संबंध का अध्ययन।
3. लोक साहित्य के अध्ययन की समस्याओं को जानना।
4. लोक साहित्य के प्रमुख रूपों का वर्गीकरण और परिचय
5. लोकनाट्य का परिचय एवं हिन्दी की लोकनाट्य परम्परा का अध्ययन
6. हिन्दी नाट्य एवं रंगमंच पर लोकनाट्यों के प्रभाव का अध्ययन करना।

पाठ्यक्रम प्रतिफलः–

1. विद्यार्थी लोक साहित्य और लोक संस्कृति की अवधारणा का परिचय प्राप्त कर सकेंगे
2. विद्यार्थी लोकसाहित्य का अन्य सामाजिक विज्ञानों से सम्बन्ध का अध्ययन कर सकेंगे
3. लोकसाहितय के अध्ययन की समस्याओं से विद्यार्थी परिचित हो सकेंगे
4. लोक साहित्य के प्रमुख रूपों का वर्गीकरण और परिचय प्राप्त कर सकेंगे
5. विद्यार्थी लोक नाट्यों एवं हिन्दी की लोकनाट्य परम्परा का परिचय प्राप्त कर सकेंगे
6. विद्यार्थी हिन्दी नाटक एवं रंगमंच पर लोकनाट्यों के प्रभाव का अध्ययन कर सकेंगे

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

एम.ए (हिन्दी) – प्रथम सेमेस्टर
इलेक्टिव कोर कोर्स (वैकल्पिक प्रश्नपत्र)
HIN A01 – A06 में से किन्हीं 3 का चयन करें
HIN-A04 : हिन्दी भाषा और व्याकरण

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 100

इकाई 1. क. हिन्दी भाषा का उद्‌भव और विकास, 'हिन्दी' नाम और उसके विभिन्न रूप– हिंदवी, हिन्दुस्तानी, रेख्ता, दक्खिनी

ख. हिन्दी भाषा का आधुनिक स्वरूप – जनभाषा, राजभाषा राष्ट्रभाषा, सम्पर्क भाषा

इकाई 2. क. देवनागरी लिपि और उसका विकास, देवनागरी लिपि का मानकीकरण

ख. हिन्दी की मानक वर्णमाला एव ंध्वनियाँ

इकाई 3. क. भाषा और व्याकरण का संबंध
व्याकरण और भाषा विज्ञान

ख. भारत में व्याकरण का विकास एवं प्रमुख वैयाकरण – पाणिनी, हेमचन्द, कामताप्र गुरू, किशोरीदास वाजपेयी

इकाई 4. क. हिन्दी में शब्द निर्माण की प्रक्रिया और रूपों का विकास
(i) संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण, क्रिया विशेषण
(ii) उपसर्ग और प्रत्यय
(iii) संधि और समास
(iv) तत्सम्, तद्‌भव, देशज, विदेशज शब्द

ख. वाक्य रचना और उसके विभिन्न आयाम

अंक विभाजन–

कुल पाँच प्रश्न

प्रत्येक इकाई से एक–एक प्रश्न – चार प्रश्न (आन्तरिक विकल्प देय) $20 \times 4 = 80$

एक प्रश्न टिप्पणीपरक होगा (चतुर्थ इकाई से संबंधित होगा) दो टिप्पणियाँ (आन्तरिक विकल्प देय) $10 \times 2 = 20$

अनुशंसित ग्रंथ–

1. हिन्दी भाषा – महावीर प्रसाद द्विवेदी
2. हिन्दी शब्दानुशासन – किशोरी दास वाजपेयी
3. हिन्दी की वर्तनी और शब्द विश्लेषण – किशोरी दास वाजपेयी
4. अच्छी हिन्दी – रामचन्द्र वर्मा
5. हिन्दी भाषा का उद्‌भव और विकास – धीरेन्द्र वर्मा
6. हिन्दी व्याकरण – कामताप्रसाद गुरू
7. हिन्दी भाषा का उद्‌भव और विकास – उदयनारायण तिवारी
8. हिन्दी व्याकरण मीमांसा – काशीराम वर्मा
9. हिन्दी भाषा की संरचना – भोलानाथ तिवारी

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

अधिगम उद्देश्यः–

1. हिन्दी व्याकरण की महत्ता एवं उपयोगिता को स्पष्ट करना।
2. हिन्दी भाषा के उद्भव विकास को स्पष्ट करना।
3. देवनागरी लिपि, मानक हिंदी की वर्णमाला, ध्वनियाँ तथा भाषा और व्याकरा के संबंध को स्पष्ट करना।
4. हिन्दी में शब्द निर्माण की प्रक्रिया को स्पष्ट करना।

पाठ्यक्रम प्रतिफलः–

1. विद्यार्थी हिन्दी भाषा के उद्भव एवं विकास को जिसमें हिन्दी, हिन्दुस्तानी, रेढ़ता, दक्खिनी का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
2. विद्यार्थी देवनागरी लिपि के विकास व हिन्दी की मानक वर्णमाला को समझ सकेंगे।
3. विद्यार्थी भाषा एवं व्याकरण के संबंध को समझ सकेंगे तथा प्रमुख वैयाकरणों से परिचित हो सकेगें।
4. विद्यार्थी हिन्दी शब्द निर्माण की प्रक्रिया जिसमें तत्सम तद्भव, देशज, विदेशज शब्दों के निर्माण एवं उपयोगिता को समझ सकेंगे।

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

एम.ए (हिन्दी) – प्रथम सेमेस्टर

इलेक्टिव कोर कोर्स (वैकल्पिक प्रश्नपत्र)

HIN A01 – A06 में से किन्हीं 3 का चयन करें

HIN-A05 : राजस्थानी भाषा और साहित्य

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 100

इकाई 1. क. राजस्थानी भाषा : उद्‌भव और विकास
ख. राजस्थानी भाषा की व्याकरणिक विशेषताएँ
ग. राजस्थानी भाषा की बोलियाँ

इकाई 2. क. राजस्थानी साहित्य का इतिहास
ख. राजस्थानी साहित्य की प्रमुख विधाएं एवं प्रवृतियाँ
ग. राजस्थानी के प्रमुख रचनाकार एवं रचनाएँ

इकाई 3. क. राजस्थानी गद्य चयनिका –सं. ब्रजनारायण पुरोहित, श्याम प्रकाशन, जयपुर
ख. अंचलदास खींची री वचनिका –सं. भूपतिराम साकरिया, पंचशील प्रकाशन, जयपुर

इकाई 4. क. वेलि क्रिसन रूकमणी री – पृथ्वीराम राठौड़ – सं. नरोत्तमदास स्वामी
(100 से 150 छंद तक)
ख. राजस्थानी रसधारा – डॉ. शम्भूसिंह मनोहर, श्याम प्रकाशन, जयपुर

अंक विभाजन–

इकाई 3 एवं इकाई 4 के खण्ड क एवं ख प्रत्येक से एक व्याख्या – कुल चार
(आन्तरिक विकल्प देय) $20 \times 4 = 80$

प्रत्येक इकाई से एक आलोचनात्मक प्रश्न – कुल चार
(आन्तरिक विकल्प देय) $10 \times 2 = 20$

अनुशंसित ग्रंथ–

1. डॉ. तेसीतोरी (अनु. डॉ. नागवर सिंह) : पुरानी राजस्थानी, नागरी प्रथारणी सभा, वाराणसी
2. सीताराम लालस : राजस्थानी व्याकरण, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर
3. डॉ. नरोत्तमस्वामी : संक्षिप्त राजस्थानी व्याकरण, सार्दुल राजस्थानी रिसर्च इन्सटीट्यूट, बीकानेर
4. डॉ. मोतीलाल मेनारिया : राजस्थानी भाषा और साहित्य, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
5. ग्रियर्सन : राजस्थान भाषा सर्वेक्षण (अनु. डॉ. आत्माराम जाडोरिया) राजस्थान भाषा प्रचार सभा, जयपुर
6. हीरालाल माहेश्वरी : राजस्थानी भाषा और साहित्य का इतिहास
7. डॉ. भूपतिराम साकरिया तथा बद्री प्रसाद साकरिया : राजस्थानी हिन्दी – भाषा कोष भाग–2, पंचशील प्रकाशन, जयपुर
8. डॉ. कृष्णबिहारी सहल : ढोला मारू रा दूहा – एक अध्ययन, आत्माराम एंड संस दिल्ली
9. डॉ. शिवस्वरूप शर्मा (संपा.) : राजस्थानी गद्य – उद्‌गम और विकास, सार्दुल राजस्थानी रिसर्ज इन्स्टीट्यूट, बीकानेर
10. डॉ. किरण नाहटा : आधुनिक राजस्थानी साहित्यः प्रेरणास्त्रोत और प्रवृतियाँ

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

अधिगम उद्देश्यः–

1. राजस्थान प्रदेश की भाषाओं और साहित्य की समझ विकसित करना।
2. राजस्थान की सांस्कृतिक उपलब्धियों की साहित्यिक अभिव्यक्ति समझना।
3. राजस्थान गद्य और काव्य का विकास क्रम समझना।
4. राजस्थानी साहित्य की सामान्य प्रवृत्तियों का ज्ञान करना।

पाठ्यक्रम प्रतिफलः–

1. राजस्थानी भाषा के उद्भव और विकास को समझ सकेंगे
2. राजस्थान के प्रमुख रचनाकारों और साहित्य का अध्ययन कर सकेंगे
3. राजस्थानी जनमानस के सामान्य मनोविज्ञान की झलक पा सकेंगे
4. राजस्थानी भाषा की व्याकरणिय विशेषताएँ जान सकेंगे

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

इलेक्टिव कोर कोर्स (वैकल्पिक प्रश्नपत्र)

HIN A01 – A06 में से किन्हीं 3 का चयन करें

HIN-A06 : तुलसीदास

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 100

इकाई 1. श्री रामचरितमानस अयोध्याकाण्ड (दोहा संख्या 67 से 90 तक) गीताप्रेस, गोरखपुर

इकाई 2. कवितावली (उत्तर काण्ड 15 छंद) छंद संख्या – 119, 122, 126, 132, 134, 136, 140, 141, 146, 153, 155, 161, 165, 182, 229 गीताप्रेस, गोरखपुर

इकाई 3. गीतावली (बालकाण्ड 20 पद) पद संख्या – 7, 8, 9, 10, 24, 26, 31, 33, 36, 44, 73, 95, 97, 101, 104, 105, 106, 107, 110 गीताप्रेस, गोरखपुर

इकाई 4. विनय पत्रिका (20 पद) पद संख्या – 1, 3, 17, 30, 36, 41, 45, 72, 78, 79, 85, 89, 90, 94, 100, 101, 102, 103, 104 = 20 पद गीताप्रेस, गोरखपुर

अंक विभाजन–

चार व्याख्याएँ – प्रत्येक इकाई से एक (आन्तरिक विकल्प देय) $10 \times 4 = 40$

तुलसीदास की भक्ति, दर्शन, जीवन दृष्टि, काव्य कला आदि के वैशिष्ट्य पर केन्द्रित तीन आलोचनात्मक प्रश्न (आन्तरिक विकल्प देय) $20 \times 3 = 60$

अनुशंसित ग्रंथ–

1. गोस्वामी तुलसीदास – रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
2. मानस दर्शन – डॉ. श्रीकृष्णलाल, आनन्द पुस्तक भवन, काशी
3. तुलसी और उनका युग – डॉ. राजपति दीक्षित, ज्ञानमण्डल, काशी
4. रामकथा का विकास – कामिल बुल्के, हिन्दी परिषद्, प्रयाग
5. तुलसी : आधुनिक वातायन से – रमेश कुंतल मेघ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
6. परम्परा का मूल्याकन – रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
7. तुलसी काव्य मीमांसा – उदयभानु सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
8. लोकवादी तुलसीदास – विश्वनाथ त्रिपाठी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
9. भक्तिकाल में भारतीय रहस्यवाद – राधेश्याम दुबे, संजय बुक सेन्टर, वाराणसी
10. तुलसी : एक पुनर्मूल्यांकन – सं. अजय तिवारी, आधार प्रकाशन, पंचकूला
11. मध्ययुगीन काव्य साधना – रामचन्द्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

अधिगम उद्देश्यः–

1. मध्यकालीन हिन्दी साहित्य के राम केन्द्रित साहित्य का ज्ञान करना।
2. रामकाव्य धारा के सामंत विरोधी मूल्यों को समझना।
3. तुलसीदास के अवदान को रेखांकित करना।
4. अवधी भाषा की साहित्यिक उपलब्धि को समझना।

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

पाठ्यक्रम प्रतिफलः–

1. तुलसी के सांस्कृतिक अवदान विशेषतः समन्वय को समझ सकेंगे
2. मध्यकाल के विभिन्न काव्य रूपों को जान सकेंगे
3. राम की मानवीय उदारता और अन्याय प्रतिरोध को समझ सकेंगे
4. भक्ति और प्रेम की मनुष्य केन्द्रियता जान सकेंगे

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

द्वितीय सेमेस्टर

HIN 201

कम्पलसरी कोर कोर्स

प्रथम प्रश्न पत्र : हिन्दी साहित्य का इतिहास (भक्तिकाल)

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 100

पाठ्यांश :

भक्ति आन्दोलन : सामाजिक–सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, भक्ति आन्दोलन और लोक जागरण, भक्ति साहित्य एवं सामाजिक समरसता, प्रमुख निर्गुण कवि, प्रमुख सगुण कवि, निर्गुण एवं सगुण भक्ति की प्रमुख धाराएँ एवं उनकी शाखाएँ, भक्तिकाल की सामान्य विशेषताएँ

भारत में सूफीमत का उदय और विकास, सूफीमत के सिद्धान्त, हिन्दी के प्रमुख सूफी कवि और काव्य ग्रंथ, सूफी काव्यधारा की सामान्य विशेषताएँ।

अंक विभाजन–

आलोचनात्मक प्रश्न – कुल पाँच $(20 \times 4 = 80$ अंक)

अन्तिम प्रश्न टिप्पणीपरक होगा। $(10 \times 2 = 20$ अंक)

सभी प्रश्नों के आन्तरिक विकल्प देय।

अनुशंसित ग्रंथ–

1. रामचन्द्र शुक्ल – हिन्दी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
2. हजारी प्रसाद द्विवेदी – हिन्दी साहित्य : उद्‌भव और विकास, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
3. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र – हिन्दी साहित्य का अतीत (भाग–एक), वाणी वितान, ब्रहमनाल, वाराणसी
4. रामस्वरूप चतुर्वेदी – हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास, लोकभारती, इलाहाबाद
5. नलिन विलोचन शर्मा – साहित्य का इतिहास दर्शन, बिहारी राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना
6. बच्चन सिंह – हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
7. मैनेजर पाण्डेय – साहित्य और इतिहास दृष्टि, पिपुल्स लिटरेसी, दिल्ली
8. त्रिभुवन सिंह – साहित्यिक निबंध
9. भक्ति काव्य और लोक जीवन – शिवकुमार मिश्र
10. भक्ति काव्य की भूमिका – प्रेमशंकर
11. नाथपंथ और संत साहित्य – डॉ. नागेन्द्रनाथ उपाध्याय
12. हिन्दी काव्य की निर्गुण धारा में भक्ति – डॉ. श्याम सुन्दर शुक्ल
13. कबीर वाड्यम : सबद, साखी, रमैनी – डॉ. जयदेव सिंह, डॉ. वासुदेव सिंह
14. भये कबीर कबीर – डॉ. शुकदेव सिंह
15. कबीर एक नई दृष्टि – रघुवंश

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

अधिगम उद्देश्य

1. भारत के मध्यकाल की सांस्कृतिक उपलब्धियों का उद्घाटन करना।
2. हिन्दी साहित्य के स्वर्णकाल के सामाजिक–सांस्कृतिक आधार को समझना।
3. भक्ति आन्दोलन की विविध धाराओं की पहचान करना।
4. भारत के सूफीमतों का परिचय प्राप्त करना।

पाठ्यक्रम प्रतिफल

1. भक्ति आन्दोलन के सामाजिक आधारों का विश्लेषण कर सकेंगे
2. आधुनिक भारत के उदार एवं मानवीय मूल्यों के स्रोतों की पहचान कर सकेंगे
3. प्रमुख संत–भक्त–सूफी कवियों की सामाजिक संस्कृति के विकास में भूमिका की पहचान कर सकेंगे
4. लोकसाहित्य एवं शिष्ट साहित्य के अन्तर्संबंधों को समझ सकेंगे

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

द्वितीय

HIN - 202

कम्पलसरी कोर कोर्स

द्वितीय प्रश्न पत्र : भक्तिकाव्य

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 100

पाठ्यांश :

1. कबीर : कबीर ग्रंथावली – सं. श्याम सुन्दरदास

   साखी – गुरूदेव कौ अंग – 6, 7, 8, 12, 26

   सुमिरण कौ अंग – 3, 4, 10, 12, 18

   विरह कौ अंग – 10, 11, 13, 27, 28

   मन कौ अंग – 6, 7, 9, 10, 11

   पद – 23, 24, 39, 55, 72

2. सूरदास : सूरसागर – सं. डॉ धीरेन्द्र वर्मा, साहित्य भवन, इलाहाबाद

   गोकुल लीला –34, 42

   वृन्दावन लाली – 11, 16, 78

   राधा कृष्ण – 62, 70, 111

   मथुरा गमन – 10, 38, 51

   उद्धव संदेश – 9, 19, 66, 75, 77, 84, 102, 130, 132, 141, 143, 156, 186, 187

3. तुलसीदास : विनय पत्रिका, गीता प्रेस गोरखपुर

   पद – 6, 73, 84, 87, 88, 90, 91, 102, 105, 111, 115, 124, 158, 159, 162, 171, 174, 185, 188, 198, 199, 201, 202, 245

4. रहीम : ग्रंथावली – सं. विद्यानिवास मिश्र, गोविन्द रजनीश, वाणी प्रकाशन दिल्ली

   दोहावली – 4, 9, 15, 25, 28, 30, 58, 79, 89, 105

   बरवै गायिका भेद – 11, 15, 17, 38, 48, 96, 97, 107, 112, 115

   फुटकर पद – 3, 5, 7, 12, 13

अंक विभाजन–

व्याख्या – कुल चार $(10 \times 4 = 40$ अंक)

आन्तरिक विकल्प देय

आलोचनात्मक प्रश्न कुल चार $(15 \times 4 = 60$ अंक)
आन्तरिक विकल्प देय

व्याख्या और प्रश्न प्रत्येक इकाई से पूछा जाना अपेक्षित है

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

अनुशंसित ग्रंथ–

1. रामचन्द्र शुक्ल – हिन्दी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी

2. हजारी प्रसाद द्विवेदी – हिन्दी साहित्य उद्‌भव और विकास, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

3. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र – हिन्दी साहित्य का अतीत (भाग–एक), वाणी वितान, ब्रहमनाल, वाराणसी

4. रामस्वरूप चतुर्वेदी – हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास, लोकभारती, इलाहाबाद

5. बच्चन सिंह – हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास, नेशनल पब्लिशिंग हाउस

6. मैनेजर पाण्डेय – साहित्य और इतिहास दृष्टि, पिपुल्स लिटरेसी, दिल्ली

7. त्रिभुवन सिंह – साहित्यिक निबंध

8. भक्ति काव्य और लोक जीवन – शिवकुमार मिश्र

9. भक्ति काव्य की भूमिका – प्रेमशंकर

10. नाथपंथ और संत साहित्य – डॉ. नागेन्द्रनाथ उपाध्याय

11. हिन्दी काव्य की निर्गुण धारा में भक्ति – डॉ. श्याम सुन्दर शुक्ल

12. कबीर वाड्‌यम : सयबद, साखी, रमैनी – डॉ. जयदेव सिंह, डॉ. वासुदेव सिंह

13. भये कबीर कबीर – डॉ. शुकदेव सिंह

14. कबीर एक नई दृष्टि – रघुवंश

अधिगम उद्‌देश्य

1. भक्ति आन्दोलन की निर्गुण–सगुण धाराओं का विस्तृत अध्ययन करना।
2. संत मत की प्रमुख विशेषताओं को समझना।
3. ब्रजभाषा की काव्य धाराओं के योगदान को रेखंकित करना।
4. रहीम व अन्य कवियों के परवर्ती साहित्य पर प्रभाव को समझना।

पाठ्‌यक्रम प्रतिफल

1. कबीर साहित्य का विस्तृत अध्ययन कर सकेंगे।
2. सूरदास की कविता के माध्यम से लीलाओं की महत्ता का आंकलन कर सकेगे।
3. राम केन्द्रित साहित्य का भारतीय समाज के लिए योगदान को समझ सकेगे।
4. भक्ति की लोक में उपस्थिति को चिह्नित कर सकेंगे

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

एम.ए (हिन्दी)

द्वितीय सत्र

HIN-203

कम्पलसरी कोर कोर्स

तृतीय प्रश्न पत्र : भारतीय काव्यशास्त्र

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 100

पाठ्यांश :

1. काव्यशास्त्र का इतिहास – सामान्य परिचय
2. काव्य लक्षण, काव्य हेतु एवं काव्य प्रयोजन
3. रस सिद्धान्त – रस की अवधारणा, रस निष्पत्ति और साधारणीकरण
4. ध्वनि सिद्धान्त – ध्वनि की अवधारणा, ध्वनि का विचार स्रोत, ध्वनि का वर्गीकरण, ध्वनि सिद्धान्त का महत्व
5. अलंकार सिद्धान्त – अलंकार की अवधारणा, अलंकार और अलंकार्य, अलंकारों का वर्गीकरण, अलंकार सिद्धान्त एवं अन्य सम्प्रदाय
6. रीति सिद्धान्त – रीति की अवधारणा, रीति एवं गुण, रीति का वर्गीकरण
7. वक्रोक्ति सिद्धान्त – वक्रोक्ति की अवधारणा, वक्रोक्ति का वर्गीकरण, वक्रोक्ति एवं अनिव्यंजनवाद, वक्रोक्ति का महत्व
8. औचित्व सिद्धान्त – औचित्य की अवधारणा, औचित्य का महत्व

अंक विभाजन–

कुल पाँच प्रश्न $(20 \times 4 = 80$ अंक)

अंतिम प्रश्न टिप्पणी परक होगा। $(10 \times 2 = 20$ अंक)

सभी प्रश्नों के आन्तरिक विकल्प देय।

अनुशंसित ग्रंथ–

1. भारतीय साहित्यशास्त्र : गणेश त्र्यंबक देशपांडे, पापुलर बुक डिपो, पूना
2. रसमीमांसा : रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
3. संस्कृत आलोचना : बलदेव उपाध्याय
4. रस प्रक्रिया : शंकरदेव अवतरे, दिल्ली
5. हिस्ट्री आफ संस्कृत पोएटिक्स : पी.बी. काणे, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली
6. काव्याशास्त्र की भूमिका : डॉ. नगेन्द्र नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
7. भारतीय काव्याशास्त्र के नये क्षितिज : राममूर्ति त्रिपाठी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
8. ध्वनि सम्प्रदाय और उनके सिद्धान्त : भोलाशंकंर व्यास, चौखंभा, वाराणसी
9. काव्याशास्त्र : भागीरथ मिश्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी
10. भारतीय काव्य विमर्श : राममूर्ति त्रिपाठी, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
11. भारतीय काव्याशास्त्र की आचार्य परम्परा : डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी
12. ध्वन्यालोक : आचार्य चण्डिका प्रसाद शुक्ल

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

अधिगम उद्देश्य

1. आलोचना के प्रारम्भिक भारतीय स्रोतों को जानना।
2. काव्य–आलोचना के सिद्धान्तों के परिवेश को जानना।
3. आलोचना के आदि आचार्यों के अवदान की पड़ताल करना।
4. वाद–विवाद–संवाद की परम्परा का ज्ञान।

पाठ्यक्रम प्रतिफल

1. भारतीय आलोचनाशास्त्र का इतिहास जान सकेंगे
2. काव्यांगों का विवेचन कर सकेंगे
3. विभिन्न सम्प्रदायों का परिचय प्राप्त कर सकेंगे
4. काव्यास्वाद की प्रक्रिया समझ सकेंगे

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

एम.ए (हिन्दी) – द्वितीय सेमेस्टर
इलेक्टिव कोर कोर्स (वैकल्पिक प्रश्नपत्र)
6 में से हिन्दी 3 का चयन करें
HIN-A01 : राजस्थान के प्रमुख संत कवि

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 100

पाठ्यांश :

1. जाम्भोजी : भारतीय साहित्य के निर्माता : हीरा लाल माहेश्वरी, साहित्य अकादमी, दिल्ली
   अध्याय 1 : पद – 1, 2, 4
   अध्याय 2 : पद – 2
   अध्याय 3 : पद – 2, 8, 13, 14, 26, 39
   संत काव्य : आयार्च परशुराम चतुर्वेदी, किताब महल, इलाहाबाद से निम्नांकित पाठ्यांश
2. दादूदयाल : पद – 1, 2, 3, 4, 5, 7 साखी – 1 से 10
3. सुन्दरदास : पद 1 से 4, साखी – 1 से 10
4. सहजो बाई : सम्पूर्ण

अंक विभाजन–

व्याख्या – कुल चार $(10 \times 4 = 40$ अंक)

आन्तरिक विकल्प देय

आलोचनात्मक प्रश्न कुल चार $(15 \times 4 = 60$ अंक)
आन्तरिक विकल्प देय

व्याख्या और प्रश्न प्रत्येक इकाई से पूछा जाना अपेक्षित है

अनुशंसित ग्रंथ–

1. हिन्दी काव्य की निर्गुण धारा में भक्ति : डॉ. श्याम सुन्दर शुक्ल
2. हिन्दी काव्य में निर्गुण सम्प्रदाय : पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल
3. उत्तरी भारत की संत परम्परा : परशुराम चतुर्वेदी
4. संत अंक (कल्याण) : गीता प्रेस, गोरखपुर
5. सहजो बाई का सहज प्रकाश : वेलवेडियर, प्रेस प्रयाग
6. सुन्दर ग्रंथावली : सं. हरिनारायण शर्मा

अधिगम उद्देश्य

1. राजस्थान के मध्यकाल की पड़ताल करना।
2. राजस्थान की सांस्कृतिक–साहित्यिक उपलब्धियों का ज्ञान करना।
3. राजस्थान के मध्यकालीन हिन्दी साहित्य का अध्ययन करना।
4. राजस्थान में सामासिक संस्कृति के साहित्य का अध्ययन करना।

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

पाठ्यक्रम प्रतिफल

1. राजस्थान में निर्गुण संत काव्य धारा का ज्ञान प्राप्त कर सकेगे।
2. विभिन्न संतों की कविता और कबीर की अन्तर्धारा को समझ सकेंगे
3. निर्गुण धारा के सामाजिक आधार को जान सकेंगे
4. मीरां के अतिरिक्त राजस्थान के मध्यकाल में स्त्री स्वर का अध्ययन कर सकेंगे

एम.ए (हिन्दी) – द्वितीय सेमेस्टर
इलेक्टिव कोर कोर्स (वैकल्पिक प्रश्नपत्र)
6 में से किन्हीं 3 का चयन करें
HIN-A02 : रसखान

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 100

पाठ्यांश :

रसखान रचनावली : सं. विद्या निवास मिश्र, सत्यदेव मिश्र, वाणी प्रकाशन दिल्ली से निम्नांकित पाठ्यांश

1. सुजान रसखान : पद 3, 5, 7, 10, 13, 26, 29, 31, 37, 41, 56, 61, 67, 82, 85, 99, 103, 124, 129, 130, 140, 145, 155, 159, 169, 174, 191, 225, 248
2. प्रेम वाटिका : पद 10 से 19 तथा 33 से 42

अंक विभाजन–

व्याख्या – कुल चार $(10 \times 4 = 40$ अंक)

आन्तरिक विकल्प देय

आलोचनात्मक प्रश्न कुल चार $(15 \times 4 = 60$ अंक)

आन्तरिक विकल्प देय

व्याख्या और प्रश्न प्रत्येक इकाई से पूछा जाना अपेक्षित है

अनुशंसित ग्रंथ–

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास – रामचन्द्र शुक्ल
2. हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास – रामकुमार वर्मा
3. हिन्दी के मुसलमान कवियों का प्रेम काव्य – गुरूदेव प्रसाद वर्मा
4. रसखान और उनका काव्य – चन्द्रशेखर पाण्डेय
5. रसखान : जीवन और कृतित्व – देवेन्द्र प्रताप उपाध्याय
6. रसखान ग्रंथावली – आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
7. रसखान : काव्य और भक्ति भावन – डॉ. माजरा असद
8. रसखान पदावली –सं. प्रभुदत्त ब्रहमचारी

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

अधिगम उद्देश्य

1. भक्ति साहित्य के विस्तृत फलक का अध्ययन करना।
2. कृष्ण की सांस्कृतिक छवि को समझना।
3. ब्रजभाषा की रसात्मक विशेषता का विश्लेषण करना।
4. भक्ति के पदों का जनसाधारण चरित्र समझना।

पाठ्यक्रम प्रतिफल

1. भक्ति आन्दोलन की धर्मनिरपेक्ष प्रकृति को जान सकेंगे।
2. रसखान को सामाजिक प्रतीक के रूप में समझ सकेंगे।
3. प्रेम की सामाजिकता को जान सकेंगे।
4. मध्यकालीन काव्य की लोकोन्मुखता समझ सकेंगे।

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

एम.ए (हिन्दी) – द्वितीय सेमेस्टर
इलेक्टिव कोर कोर्स (वैकल्पिक प्रश्नपत्र)
6 में से किन्हीं 3 का चयन करें
HIN-A03 : साहित्य और सिनेमा

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 100

पाठ्यांश :

इकाई 1. सिनेमा का उदय और अवाक् सिनेमा
सवाक् सिनेमा का आरम्भ
सिनेमा और साहित्य का अन्त : संबंध
नाटक और पटकथा – सिनेमा के संदर्भ में

इकाई 2. सिनेमा और भारतीय समाज का संबंध
पौराणिक फिल्मों का दौर
ऐतिहासिक फिल्मों का दौर
सामाजिक फिल्मों का दौर
भारत की सामाजिक समस्याएं और हिन्दी सिनेमा

इकाई 3. हिन्दी सिनेमा ओर साहित्यकार (गद्यकार)
उर्दू साहित्याकार – मण्टों, कृष्णचन्दर, राजेन्द्र सिंह बेदी
हिन्दी के साहित्याकार – प्रेमचंद, अमृतलाल नागर, भगवती चरण वर्मा, फणीश्वर नाथरेणु सिनेमा और साहित्याकार के संबंध

इकाई 4. हिन्दी सिनेमा और साहित्याकार (पद्यकार)
संगीत और सिनेमा
हिन्दी गीत और सिनेमा – नरेन्द्र शर्मा, नीरज, रामवतार त्यागी, राजेन्द्र कृष्ण आदि
हिन्दी गीत की की सिनेमा में उपस्थिति : सार्थकता और आवश्यकता

इकाई 5. सिनेमा और समाज का अन्तःसंबंध
दर्शक की प्रतिक्रिया और सिनेमा
सिनेमा की कलात्मकता
सिनेमा में विम्ब विधान
सिनेमा में प्रतीक विधान

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

अंक विभाजन–

कुल पांच प्रश्न	(20 × 4 = 80 अंक)
अंतिम प्रश्न टिप्पणी परक होगा।	(10 × 2 = 20 अंक)
सभी प्रश्नों के आन्तरिक विकल्प देय।	

अनुशंसित ग्रंथ–

1. जवरीमल्ल पारख, जनसंचार माध्यमों का राजनीतिक चरित्र, अनामिका पब्लिशर्स।
2. रामअवतार अग्निहोत्री, आधुनिक हिन्दी सिनेमा का सामाजिक व राजनीतिक अध्ययन, कामनवेल्थ पब्लिशर्स
3. जवरीमल्ल पारख, लोकप्रिय सिनेमा और सामाजिक यथार्थ, अनामिका पब्लिशर्स।
4. विजय अग्रवाल, आज का सिनेमा, नीलकंठ प्रकाशन
5. जवरीमल्ल पारख, हिन्दी सिनेमा का समाजशास्त्र, ग्रंथ शिल्पी प्रकाशन
6. विनोद दास, भारतीय सिनेमा का अंतःकरण, मेधा बुक्स
7. विजय अग्रवाल, सिनेमा और समाज, सत्साहित्य प्रकाशन
8. विनोद भारद्वाज, नया सिनेमा रूपा एंड कम्पनी
9. विजय अग्रवाल, सिनेमा की संवदेना, प्रतिमा प्रतिष्ठान
10. विजय अग्रवाल, सिनेमा समाज, सत्साहित्य प्रकाशन दिल्ली
11. प्रहलाद अग्रवाल, आधी हकीकत आधा फसाना, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. नई दिल्ली
12. विष्णु खरे, सिनेमा पढ़ने के तरीके, प्रवीण प्रकाशन नई दिल्ली
13. चिदानन्द दास गुप्ता, सत्यजीत राय का सिनेमा, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली
14. विनोद दास, भारतीय सिनेमा का अंतःकरण, मेधा बुक्स, दिल्ली
15. तारकोवस्की, अनंत में फैलते बिंब, संवाद प्रकाशन, मुम्बई : मेरठ
16. जवरीमल्ल पारख, जनसंचार माध्यमों का सामाजिक चरित्र : अनामिका पब्लिशर्स दिल्ली
17. जगदीश्वर चतुर्वेदी, जनमाध्यम और मास कल्चर : सारांश प्रकाशन नई दिल्ली

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

अधिगम उद्देश्य

1. समाज अध्ययन के लिए सिनेमा को महत्वपूर्ण अनुशासन के रूप में समझना।
2. आधुनिकता और सिनेमा के विकास में अन्तर्संबंध को जानना।
3. सिनेमा के माध्यम से उपनिवेशवाद विरोध का अध्ययन करना।
4. सिनेमाई रचनात्मकता पर प्रकाश डालना।

पाठ्यक्रम प्रतिफल

1. भारत में सिनेमा के उदय की चुनौतियों को समझ सकेंगे।
2. पौराणिक–ऐतिहासिक फिल्मों की सामाजिकता को समझ सकेंगे।
3. साहित्यकारों के सिनेमा में योगदान को रेखांकित कर सकेंगे।
4. समाज, समय और कला के अन्तर्संबंध को जान सकेंगे।

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

एम.ए (हिन्दी) – द्वितीय सेमेस्टर

इलेक्टिव कोर कोर्स (वैकल्पिक प्रश्नपत्र)

6 में से किन्हीं 3 का चयन करें

HIN-A04 : अनुवाद : सिद्धान्त और प्रविधि

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 100

पाठ्यांश :

1. अनुवाद का अर्थ, स्वरूप एवं प्रकृति। अनुवाद कार्य की आवश्यकता एवं महत्व। बहुभाषी समाज में, परिवर्तन तथा बौद्धिक–सांस्कृतिक आदान–प्रदान में अनुवाद कार्य की भूमिका।
2. अनुवाद के प्रकार : शाब्दिक अनुवाद, भावानुवाद, छायानुवाद एवं सारानुवाद। अनुवाद–प्रक्रिया के तीन चरण – विश्लेषण, अंतरण एवं पुनर्गठन। अनुवाद की भूमिका के तीन पक्ष–पाठक की भूमिका (अर्थग्रहण की) प्रक्रिया द्विभाषिक की भूमिका (अर्थातंरण की प्रक्रिया) एवं रचयिता की भूमिका (अर्थसम्प्रेषण की प्रक्रिया)
3. सर्जनात्मक साहित्य के अनुवाद की अपेक्षाएं। सर्जनात्मक साहित्य के अनुवाद और तकनीकी अनुवाद में अन्तर। गद्यानुवाद एवं काव्यानुवाद में संरचनात्मक भेद। किन्हीं दो अनुदित कृतियों का समीक्षात्मक अध्ययन।
4. कार्यलयीन अनुवाद : राजभाषा नीति के अनुपालना में धारा 3(3) के अन्तर्गत निर्धारित दस्तावेज का अनुवाद। शासकीय पत्र/ अर्धशासकीय पत्र/ परिपत्र (सर्कुलर)/ ज्ञापन (प्रजेंटेशन)/कार्यालय आदेश/ अधिसूचना/ संकल्प–प्रस्ताव (रेज्योलूशन)/ निविदा–संविदा/ विज्ञापन आदि के संबंधित तकनीकीपरक पारिभाषिक शब्दावली।

अंक विभाजन–

कुल पाँच प्रश्न $(20 \times 4 = 80$ अंक)

अंतिम प्रश्न टिप्पणी परक होगा। $(10 \times 2 = 20$ अंक)

सभी प्रश्नों के आन्तरिक विकल्प देय।

अनुशंसित ग्रंथ–

1. अनुवाद सिद्धान्त एवं समस्याएं : रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव एवं कृष्णकुमार गोस्वामी, आलेख प्रकाशन दिल्ली।
2. अनुवाद विज्ञान एवं संप्रेषण : हरिमोहन, तक्षशिला प्रकाशन नई दिल्ली
3. अनुवाद सिद्धान्त : डॉ. भोलानाथ तिवारी, साहित्य सहकार दिल्ली
4. अनुवाद शिल्प समकालीन संदर्भ : डॉ. कुसुम अग्रवाल, साहित्य सहकार दिल्ली
5. प्रयोजनमूलक हिन्दी सिद्धान्त और व्यवहार : रघुनन्दन प्रसाद शर्मा वि.वि. प्रकाशन, वाराणसी
6. अनुवाद सिद्धान्त एवं रूपरेखा : डॉ. सुरेश कुमार वाणी, प्रकाशर दिल्ली
7. अनुवाद सिद्धान्त एवं प्रयोग : जी. गोपीनाथ लोकभारती, इलाहाबाद
8. अनुवाद विज्ञान सिद्धान्त तथा अनुप्रयोग : डॉ. नगेन्द्र, दिल्ली
9. अनुवाद की सामाजिक भूमिका : सीताराम पालीवाल, सचिन प्रकाशन, दिल्ली

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

अधिगम उद्देश्य

1. अनुवाद के सैद्धान्तिक आधार बताना।
2. सर्जनात्मक अनुवाद का महत्व स्पष्ट करना।
3. अनुवाद की जरूरत को समझना।
4. अनुवाद की चुनौतियाँ एवं समाधान पर ध्यान देना।

पाठ्यक्रम प्रतिफल

1. अनुवाद के सही अर्थ, स्वरूप और प्रकृति की समझ विकसित कर सकेंगे।
2. दो भिन्न भाषाओं, संस्कृतियों को एक–दूसरे के निकट आने में अनुवाद की भूमिका को समझ सकेंगे।
3. विभिन्न कार्यालयी जरूरतों के लिए अनुवाद को जान सकेंगे।
4. अनुवाद के विभिन्न प्रारूपों को सीख सकेंगे।

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

एम.ए (हिन्दी) – द्वितीय सेमेस्टर

इलेक्टिव कोर कोर्स (वैकल्पिक प्रश्नपत्र)

6 में से किन्हीं 3 का चयन करें

HIN-A05 : पत्रकारिता और जनसंचार

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 100

पाठ्यांश :

पत्रकारिता की परिभाषा, प्रकृति, उद्देश्य एवं महत्त्व, पत्रकारिता का इतिहास

पत्रकारिता की विधाएं–प्रिंट एवं इलेक्ट्रोनिक मीडिया

मुक्त प्रेस की अवधारणा, प्रेस कानून और आचार–संहिता। लोकतंत्र का चतुर्थ स्तंभः पत्रकारिता

जनसंचार :

जनसंचार – परिभाषा, प्रकृति, उद्देश्य एवं महत्त्व

संचार – परिभाषा, प्रकृति, महत्व एवं प्रकार, जनसंचार के सिद्धान्त

जनसंचार के माध्यम–प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रोनिक मीडिया, परम्परागत माध्यम जनसंचार एवं विकास

रिर्पोटिंग और सम्पादन :

समाचार पत्र संगठन की संरचना (संपादकीय, प्रबंधन व प्रसार की रूपरेखा)

रिर्पोटिंग – परिभाषा, प्रकृति, उद्देश्य एवं महत्व, रिपोर्टर के गुण, कार्य एवं दायित्व

संपादन – परिभाषा, प्रकृति, उद्देश्य एवं महत्व, सम्पादक एवं उपसंपादक के कार्य एवं दायित्व

समाचार पत्र के सम्पादन में बरती जाने वाली सावधानियाँ

जनसम्पर्क एवं विज्ञापन :

जनसम्पर्क – परिभाषा, प्रकृति, उद्देश्य एवं महत्त्व, सरकारी एवं गैरसरकरी क्षेत्रों में जनसम्पर्क, जनमत निर्माण

विज्ञापन – परिभाषा, प्रकृति, उद्देश्य एवं महत्त्व, विज्ञापन के विभिन्न प्रकार

अंक विभाजन–

कुल पांच प्रश्न	(20 × 4 = 80 अंक)
अंतिम प्रश्न टिप्पणी परक होगा।	(10 × 2 = 20 अंक)
सभी प्रश्नों के आन्तरिक विकल्प देय।	

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

अनुशंसित ग्रंथ–

1. हिन्दी पत्रकारिता का वृहद् इतिहास : अर्जुन तिवारी
2. पत्रकारिता एवं संपादन कला : एन.सी. पंत
3. हिन्दी पत्रकारिता : डॉ. धीरेन्द्र नाथ सिंह
4. समकालीन पत्रकारिता : मूल्यांकन और मुद्दे – राजकिशोर
5. जनसम्पर्क एवं विज्ञापन :संतोष गोयल
6. पत्रकारिता की चुनौतियां : गणेश मंत्री
7. रूपक लेखन : ब्रजभूषण सिंह

अधिगम उद्देश्य

1. पत्रकारिता एवं जनसंचार के महत्त्व को जानना।
2. पत्रकारिता के कौशल को विकसित करना।
3. पत्रकारिता के नए क्षेत्रों का परिचय करना।
4. जनसंपर्क और विज्ञापन के महत्व को जानना।

पाठ्यक्रम प्रतिफल

1. हिन्दी पत्रकारिता के इतिहास को जान सकेंगे।
2. लोकतंत्र में पत्रकारिता की भूमिका समझ सकेंगे।
3. जनसंपर्क और विज्ञापन कौशल में दक्ष हो सकेंगे।
4. नागरिक जिम्मेदारियों के प्रति सचेत हो सकेंगे।

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

एम.ए (हिन्दी) – द्वितीय सेमेस्टर
इलेक्टिव कोर कोर्स (वैकल्पिक प्रश्नपत्र)
6 में से किन्हीं 3 का चयन करें
HIN-A06 : मीरा

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 100

पाठ्यांश :

मीरा पदावली : सं. डॉ. शम्भुसिंह मनोहर, रिसर्च पब्लिकेशन जयपुर से निम्नांकित पाठ्यांश
पद – 01 से 100 तक

अंक विभाजन–

व्याख्या : कुल चार $(10 \times 4 = 40$ अंक)
आन्तरिक विकल्प देय।
आलोचनात्मक प्रश्न कुल चार $(15 \times 4 = 60$ अंक)
आन्तरिक विकल्प देय।

अनुशंसित ग्रंथ–

1. उत्तर भारत की संत परंपरा : परशुराम चतुर्वेदी
2. मीराँ –मंदाकिनी : नरोत्तमदास स्वामी
3. मीराँ–माधुरी : ब्रजरत्नदास
4. मीराँ : एक अध्ययन – पद्मावती शबनम
5. मीराँ का काव्य – विश्वनाथ त्रिपाठी
6. मीराँ, सहजो और दयाबाई : वियोगी हरि
7. मीराँ – पदावली – परशुराम चतुर्वेदी
8. मीराँ वृहत–पद–संग्रह – पद्मावती शबनम
9. मीराँ की प्रेम साधना – भुवनेश्वर 'मिश्र' माधव
10. पचरंग चोला पहन सखी री : माधव हाड़ा
11. राजस्थानी भाषा और साहित्य – डॉ. मोतीलाल मेनारिया
12. राजस्थानी भाषा और साहत्य – डॉ. हीरालाल माहेश्वरी
13. मध्यकालीन हिन्दी कवयित्रियाँ – सावित्री सिन्हा
14. हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास – डॉ. सुमन राजे

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

अधिगम उद्देश्य

1. भक्ति आन्दोलन में लैंगिक अभिव्यक्ति का अध्ययन करना।
2. सामंतवाद की चुनौतियों को समझना।
3. राजस्थान के परिवेश का ज्ञान करना।
4. स्त्री रचनाकारों की कविता का शिल्प समझना।

पाठ्यक्रम प्रतिफल

1. सामन्तवाद और स्त्री विषय की अभिव्यक्ति का ज्ञान कर सकेंगे।
2. मीराँ की कविता का अध्ययन कर सकेंगे।
3. स्त्री मन और प्रकृति की पड़ताल कर सकेंगे।
4. रैदास, नाथपंथ और मीराँ की कविता के अन्तर्सबंध को समझ सकेंगे।

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

कम्पलसरी कोर कोर्स

HIN-301 : हिन्दी साहित्य का इतिहास – रीतिकाल

इकाई 1. रीतिकाल – नामकरण एवं सीमांकन
रीतिकाल की तत्कालीन परिस्थितियां (राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक)
'रीति' शब्द की व्याख्या और रीतिकाव्य का लक्षण – शास्त्रीय और साहित्यिक पृष्ठाधार

इकाई 2. रीतिकाव्य की मूल प्रवृतियाँ
रीतिकाव्य की प्रमुख धाराएँ –
* रीतिबद्ध काव्य – सामान्य विशेषताएं एवं प्रमुख कवि
* रीतिसिद्ध काव्य – सामान्य विशेषताएं एवं प्रमुख कवि
* रीतिमुक्त काव्य – सामान्य विशेषताएं एवं प्रमुख कवि

इकाई 3. रीतिकाल की अन्य प्रवृत्तियाँ – भक्तिकाव्य, वीरकाव्य, नीतिकाव्य
रीतिकाल का गद्य साहित्य
रीतिकाल की उपलब्धियाँ

इकाई 4. काव्य के अंग – रस, छंद, अलंकार
काव्य गुण, काव्य दोष, शब्द–शक्ति

अंक विभाजन–

चार आलोचनात्मक प्रश्न – इकाई 1,2 एवं 3 से (आन्तरिक विकल्प देय)	$(20 \times 4 = 80)$
एक टिप्पणीपरक प्रश्न इकाई 4 से (आन्तरिक विकल्प देय)	$(10 \times 2 = 20)$

अनुशंसित ग्रंथ–

1. हिन्दी रीति साहित्य – भगीरथ मिश्र, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
2. रीति काव्य की भूमिका – डॉ. नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली
3. हिन्दी साहित्य का अतीत, भाग 1 – विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
4. रीतिकवियों की मौलिक देन – किशोरीलाल, साहित्य भवन प्रा. लि., इलाहाबाद
5. रीतिकाव्य – नंदकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
6. केशवदास – विजयपाल सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
7. बिहारी का नया मूल्यांकन – बच्चन सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
8. रीति काव्य : मूल्यांकन के नये आयाम – सं. प्रभाकर सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
9. काव्यशास्त्र विमर्श – कृष्णनारायण प्रसाद 'मागध', वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
10. रीति काव्य की इतिहास दृष्टि – सुधीन्द्र कुमार, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

अधिगम उद्देश्य

1. रीतिकाल के नामकरण, सीमांकन और तत्कालीन परिस्थितियों का ज्ञान कराना।
2. 'रीति' शब्द की व्याख्या और रीति काव्य की विभिन्न धाराओं का बोध कराना।
3. रीतिकाल की विभिन्न प्रवृत्तियों का परिचय कराना।
4. काव्य गुण, काव्य दोष, शब्द–शक्ति, रस, छंद, अलंकार आदि को स्पष्ट करना।

पाठ्यक्रम प्रतिफल

1. विद्यार्थी 'रीति' शब्द का अर्थ–ग्रहण कर रीतिकाल के नामकरण की युक्तिसंगतता को समझ सकेंगे।
2. विद्यार्थी रीतिकालीन परिस्थितियों को समझकर साहित्य पर पड़े प्रभावों का आकलन कर सकेंगे।
3. विद्यार्थी रीतिकालीन साहित्य की विभिन्न प्रवृत्तियों की व्याख्या कर सकेंगे।
4. विद्यार्थी काव्य के स्वरूप, रस, छंद, अलंकार, काव्य गुण, काव्य दोष शब्द शक्ति आदि को समझकर साहित्यिक मूल्यांकन कर सकेंगे।
5. विद्यार्थी रीतिकाल की विविध धाराओं के परस्पर अंतर को समझ सकेंगे।

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

कम्पलसरी कोर कोर्स

HIN-302 : रीति काव्य

इकाई 1. केशवदास : रामचन्द्रिका – लक्ष्मण परशुराम संवाद, अंगद रावण संवाद

इकाई 2. बिहारी – बिहारी रत्नाकर (सं. जगन्नाथदास रत्नाकर) – प्रथम 50 दोहे

इकाई 3. भूषण – भूषण ग्रंथावली (सं. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र) – प्रथम 20 छंद

इकाई 4. घनानंद कवित (सं. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र) – प्रथम 20 छंद

अंक विभाजन–

चार व्याख्याएं (आन्तरिक विकल्प देय) $(10 \times 4 = 40)$

चार आलोचनात्मक प्रश्न (आन्तरिक विकल्प देय) $(15 \times 4 = 60)$

प्रत्येक इकाई से व्याख्या और प्रश्न पूछा जाना अपेक्षित है।

अनुशंसित ग्रंथ–

1. रीतिकाव्य – नंदकिशोर नवल
2. केशवदास – विजयपाल सिंह
3. घनानन्द का काव्य – रामदेव शुक्ल
4. बिहारी की काव्यभूमि – विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
5. बिहारी का नया मूल्यांकन – बच्चन सिंह
6. घनानन्द – मनोहर लाल गौड़

अधिगम उद्देश्य

1. रीतिकाल की प्रमुख कृतियों और कवियों का परिचय कराना।
2. प्रमुख साहित्यिक रचनाओं के साहित्यिक–सौष्ठव का बोध कराना।
3. साहित्यिक कृतियों का मूल्यांकन कर उनका स्थान निर्धारण करने की क्षमता विकसित करना।
4. प्रमुख काव्य–रचनाओं में प्रयुक्त भाषिक–कौशल, छंद–विधान, गति, यति आदि की पहचान कराना।

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

पाठ्यक्रम प्रतिफल

1. विद्यार्थी केशवदास की 'रामचंद्रिका' के साहित्यिक सौष्ठव को अभिव्यक्त कर सकेंगे।
2. विद्यार्थी बिहारी के काव्य–कौशल पर टिप्पणी कर सकेंगे।
3. विद्यार्थी भूषण की रचनाओं में निहित तत्कालीन सामाजिक और राजनीतिक घटनाओं पर परिचर्चा कर सकेंगे।
4. विद्यार्थी घनानंद की कविताओं के रसात्मक बोध को अनुभूत कर अन्य कवियों से तुलना कर सकेंगे।

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

एम.ए (हिन्दी) – तृतीय सेमेस्टर
कम्पलसरी कोर कोर्स
HIN-303 : पाश्चात्य साहित्यशास्त्र

इकाई 1. प्लेटो – काव्य चिंतन
अरस्तू – अनुकरण एवं त्रासदी सिद्धान्त
लोंजाइनस – काव्य में उदात्त तत्व

इकाई 2. कॉलरिज – कल्पना तथा फेंटेसी
वड्र्सवर्थ – काव्य भाषा सिद्धान्त
क्रोचे – अभिव्यंजनावाद

इकाई 3. टी.एस. इलियट – परम्परा तथा वैयक्तिक प्रतिभा, निर्वेयक्तिता का सिद्धान्त
आई.ए. रिचड्र्स – मूल्य सिद्धान्त, संप्रेषण सिद्धान्त
नई समीक्षा

इकाई 4. मार्क्सवाद, मनोविश्लेषणवाद, यथार्थवाद, आधुनिकता, उत्तर आधुनिकता, संरचनावाद विखण्डनवाद, शैली विज्ञान

अंक विभाजन–

चार आलोचनात्मक प्रश्न – इकाई 1, 2, 3 से (आन्तरिक विकल्प देय) $(20 \times 4 = 80)$

एक टिप्पणीपरक प्रश्न (दो टिप्पणियां) – इकाई 4 से (विकल्प देय) $(10 \times 2 = 20)$

अनुशंसित ग्रंथ–

1. काव्य चिंतन की पश्चिमची परम्परा – निर्मला जैन, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
2. पाश्चात्य काव्यशास्त्र – भगीरथ मिश्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
3. पाश्चात्य काव्यशास्त्र का इतिहास – तारकनाथ बाली, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली
4. पाश्चात्य काव्यशास्त्र : अधुनातन संदर्भ – सत्यदेव मिश्र, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
5. पाश्चात्य काव्यशास्त्र – विजय बहादुर सिंह, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली
6. संरचनावाद, उत्तर संरचनावाद और प्राच्यवाद – गोपीचन्द नारंग, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली
7. पाश्चात्य काव्यशास्त्र : नई प्रवृत्तियां – राजनाथ राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
8. हिन्दी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली – अमरनाथ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
9. प्लेटो के काव्य सिद्धान्त – निर्मला जैन, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
10. पाश्चात्य साहित्य चिंतन – करूणाशंकर उपाध्याय, राधाकृष्णन प्रकाशन, नई दिल्ली

अधिगम उद्देश्य

1. पाश्चात्य साहित्यशास्त्र के प्रमुख सिद्धांतों और अवधारणाओं से परिचय कराना।
2. प्रमुख आलोचकों और चिंतकों के सिद्धांतों में निहित अन्तर को स्पष्ट करना।
3. साहित्यिक कृतियों के मूल्यांकन में पाश्चात्य साहित्य सिद्धान्तों का अनुप्रयोग सिखाना।
4. पाश्चात्य साहित्य–चिंतन की नवीनतम अवधारणाओं और आलोचना–पद्धतियों का बोध कराना।

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

पाठ्यक्रम प्रतिफल

1. विद्यार्थी प्लेटो, अरस्तू, कॉलरिज, वर्डसवर्थ, क्रोचे, इलियट, रिचर्ड्स के साहित्य–सिद्धान्तों को समझ सकेंगे।
2. विद्यार्थी पाश्चात्य–साहित्य चिंतन में प्रचलित आधुनिक आलोचना पद्धतियों से सुपरिचित हो सकेंगे।
3. विद्यार्थी पाश्चात्य साहित्य–सिद्धान्तों और अवधारणाओं के आधार पर किसी भी साहित्यिक रचना का मूल्यांकन कर सकेंगे।
4. विद्यार्थी पाश्चात्य साहित्य–सिद्धान्तों से भारतीय साहित्य–सिद्धांत की तुलना कर सकेंगे

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

इलेक्टिव कोर कोर्स (वैकल्पिक प्रश्नपत्र)

HIN A01 – A06 में से किन्हीं 3 का चयन करें

A01 : हिन्दी कहानी

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 100

* हिन्दी कहानी का उद्‌गम और विकास

* निर्धारित पाठ–

1. कफन – प्रेमचंद
2. नीलम देश की राजकन्या – जैनेन्द्र कुमार
3. हीलीबोन की बत्तखें – अज्ञेय
4. लंदन की एक रात – निर्मल वर्मा
5. डिप्टी कलक्टरी – अमरकांत
6. लाल पान की बेगम – फणीश्वरनाथ रेणु
7. खोई हुई दिशाएं – कमलेश्वर
8. सिक्का बदल गया – कृष्णा सोबती
9. बहिर्गमन – ज्ञानरंजन
10. लकड़बग्घा – चित्रा मुद्‌गल
11. टेपचू – उदय प्रकाश
12. सलीब पर सांस – आलम शाह खान

अंक विभाजन–

चार व्याख्याएं (आन्तरिक विकल्प देय) $(10 \times 4 = 40)$
एक कहानी से एक ही व्याख्या पूछी जायेगी
चार आलोचनात्मक प्रश्न (आन्तरिक विकल्प देय) $(15 \times 4 = 60)$
कहानी, कहानीकार एवं कहानी के इतिहास से संबंधित प्रश्न पूछे जायेंगे।

अनुशंसित ग्रंथ–

1. हिन्दी कहानी का विकास – मधुरेश, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
2. हिन्दी कहानी का इतिहास : भाग 1,2,3 – गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
3. कहानी : नई कहानी – नामवर सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
4. कहानी की रचना प्रक्रिया – परमानंद श्रीवासस्त्व, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
5. हिन्दी कहानी : प्रक्रिया और पाठ – सुरेन्द्र चौधरी, राधाकृष्णन प्रकाशन, नई दिल्ली
6. कथा समय – विजयमोहन सिंह, राधाकृष्णन प्रकाशन, नई दिल्ली
7. एक दुनिया समानान्तर – सं. राजेन्द्र यादव, राधाकृष्णन प्रकाशन, नई दिल्ली
8. हिन्दी की प्रतिनिधि कहानियां ' जयंती प्रसाद नौटियाल, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

अधिगम उद्देश्य

1. हिन्दी कहानी के उद्भव और विकास को स्पष्ट करना।
2. हिन्दी कहानी की विभिन्न धाराओं और प्रवृत्तियों का ज्ञान कराना।
3. हिन्दी कहानी की विकास–यात्रा के विविध पड़ावों को सुस्पष्ट करना।
4. प्रमुख कहानीकारों की प्रतिनिधि कहानियों के साहित्यिक–सौष्ठव का बोध कराना।

पाठ्यक्रम प्रतिफल

1. विद्यार्थी हिन्दी कहानी की विकास–यात्रा और विविध–शैलियों से सुपरिचित हो सकेंगे।
2. विद्यार्थी प्रतिनिधि कहानीकारों के महत्व को समझ सकेंगे
3. विद्यार्थी कहानी के कहन–कौशल, भाषिक–विधान और उनमें निहित उद्देश्य की पहचान कर सकेंगे।
4. विद्यार्थी विभिन्न कहानियों के अध्ययन–विश्लेषण के द्वारा कहानियों का मूल्यांकन करने का कौशल विकसित कर सकेंगे।

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

इलेक्टिव कोर कोर्स (वैकल्पिक प्रश्नपत्र)

HIN A01 – A06 में से किन्हीं 3 का चयन करें

A02 : हिन्दी नाटक एवं रंगमंच

* हिन्दी नाटक का उद्‌भव और विकास
* हिन्दी रंगमंच की परम्परा और प्रयोग
* निर्धारित पाठ–

1. अंधेर नगरी – भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
2. स्कन्दगुप्त – जयशंकर प्रसाद
3. आषाढ़ का एक दिन – मोहन राकेश
4. बकरी – सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

अंक विभाजन–

चार व्याख्याएं (आन्तरिक विकल्प देय) $(10 \times 4 = 40)$
चार आलोचनात्मक प्रश्न (आन्तरिक विकल्प देय) $(15 \times 4 = 60)$
नाटक, नाटककार एवं नाटक–रंगमंच के इतिहास से संबंधित प्रश्न पूछे जायेंगे।

अनुशंसित ग्रंथ–

1. हिन्दी नाटक : उद्‌भव और विकास – दशरथ ओझा, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली
2. हिन्दी नाटक का आत्मसंघर्ष – गिरीश रस्तोगी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
3. नाटककार भारतेन्दु : नये संदर्भ, नये विमर्श – सं. रमेश गौतम, नई किताब, दिल्ली
4. मोहन राकेश और उनके नाटक – गिरीश रस्तोगी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
5. प्रसाद के नाटकों का शास्त्रीय अध्ययन – जगन्नाथ प्रसाद शर्मा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
6. जयंशकर प्रसाद : रंगसृष्टि, भाग 1,2 – महेश आनन्द, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय नई दिल्ली
7. रंगमंच के सिद्धान्त – महेश आनन्द, देवेन्द्रराज अंकुर, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
8. रंगमंच का सौन्दर्यशास्त्र – देवेन्द्रराज अंकुर, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
9. हिन्दी नाट्यशास्त्र का स्वरूप – डॉ. नर्मदेश्वर राय, हिन्दी ग्रंथ कुटीर, पटना
10. बीसवीं सदी में हिन्दी नाटक और रंगमंच – गिरीश रस्तोगी, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली

अधिगम उद्‌देश्य

1. हिन्दी नाटक और रंगमंच के उद्‌भव एवं विकास को स्पष्ट करना।
2. हिन्दी रंगमंच की परम्परा और प्रयोग का व्यावहारिक ज्ञान कराना।
3. प्रतिनिधि नाटक अंधेर नगरी, स्कन्दगुप्त, आषाढ़ का एक दिन, बकरी आदि के अध्ययन द्वारा विभिन्न नाट्य–प्रयोगों का बोध कराना।
4. नाटक और रंगमंच के परस्पर संबंधों का दिग्दर्शन कराना।

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

पाठ्यक्रम प्रतिफल

1. विद्यार्थी हिन्दी नाटक के वैशिष्ट्य की पहचान कर सकेंगे।
2. विद्यार्थी हिन्दी रंगमंच और नाटक के परस्पर संबंध की व्याख्या कर सकेंगे।
3. विद्यार्थी 'अंधेर नगरी' और 'स्कन्दगुप्त' नाटक के अध्ययन द्वारा भारतीय सामाजिक – सांस्कृतिक इतिहास की अन्तर्धाराओं से सुपरिचित हो सकेंगे।
4. विद्यार्थी 'आधे–अधूरे' और 'बकरी' नाटक के अध्ययन से आधुनिक नाटक की नवीन शैलियों की पहचान कर सकेंगे।

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

इलेक्टिव कोर कोर्स (वैकल्पिक प्रश्नपत्र)
HIN A01 – A06 में से किन्हीं 3 का चयन करें
A03 : हिन्दी निबंध

पूर्णांक : 100

इकाई 1

हिन्दी निबंध का उद्भव और विकास
रामचंद्र शुक्ल – चिंतामणि – भाग 1 (करूणा, उत्साह, श्रद्धा और भक्ति, कविता क्या है)

इकाई 2

हजारी प्रसाद द्विवेदी – अशोक के फूल (अशोक के फूल, मनुष्य ही साहित्य का लक्ष्य है, वसंत आ गया है, भारतवर्ष की सांस्कृतिक समस्या, मानव ही साहित्य का लक्ष्य है)

इकाई 3

बालमुकुंद गुप्त – शिवशंभू के चिट्ठे (बनाम लार्ड कर्जन, वायसराय का कर्तव्य, आशा का अंत, बंग विच्छेद)
हरिशंकर परसाई – विकलांग श्रद्धा का दौर, घायल बसंत, गर्दिश के दिन

इकाई 4

विद्यानिवास मिश्र – तुम चंदन हम पानी (भोर का आवाहन, तुम चंदन हम पानी, मुरली की टेर)
निर्मल वर्मा – कला का जोखिम (कला, मिथक और यथार्थ, परम्परा और इतिहासबोध)

अंक विभाजन–

चार व्याख्याएं (आन्तरिक विकल्प देय)	$(10 \times 4 = 40)$
चार आलोचनात्मक प्रश्न (आन्तरिक विकल्प देय)	$(15 \times 4 = 60)$

प्रत्येक इकाई से व्याख्या एवं प्रश्न पूछा जाना अपेक्षित है।

अनुशंसित ग्रंथ–

1. समकालीन हिन्दी निबंध – कमला प्रसाद, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला
2. हिन्दी निबंधकार – विभुराम मिश्र, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
3. हिन्दी निबंध और निबंधकार – रामचन्द्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
4. हिन्दी निबंध साहित्य का सांस्कृतिक अध्ययन – डॉ. बाबूराम, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
5. बालमुकुन्द गुप्त – सं कल्याणमल लोढ़ा
6. निबंधकार हजारी प्रसाद द्विवेदी – उषा सिंहल, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली
7. निबंधकार अज्ञेय – प्रभाकर मिश्र, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
8. आंखिन देखी – सं. कमला प्रसाद, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
9. अमृतपुत्र विधानिवास मिश्र – सं. कुमुद शर्मा प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली
10. ललित निबंध : स्वरूप और परम्परा – श्रीराम परिहार, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

अधिगम उद्देश्य

1. हिन्दी निबंध के उद्भव और विकास का बोध कराना।
2. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की निबंध कला और निबंध की विशेषताओं का उद्घाटन करना।
3. ललित निबंध–शैली और आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी तथा विद्यानिवास मिश्र के योगदान पर प्रकाश डालना।
4. बालमुकुंद गुप्त और हरिशंकर परसाई के निबंधों के माध्यम से व्यंग्य निबंध शैली का उद्घाटन करना।
5. आचार्य शुक्ल, आचार्य द्विवेदी और निर्मल वर्मा के निबंधों के द्वारा वैचारिक निबंधों के स्वरूप का दिग्दर्शन कराना।

पाठ्यक्रम प्रतिफल

1. विद्यार्थी हिन्दी नाटक के महत्व से सुपरिचित हो सकेंगे।
2. विद्यार्थी हिन्दी निबंध के विविध रूपों और शैलियों को समझ कर उनकी तुलना कर सकेंगे
3. विद्यार्थी व्यंग्य निबंधों, मनोवैज्ञानिक निबंधों, ललित निबंधों और वैचारिक निबंधों की व्याख्या कर सकेंगे तथा उनके साहित्यिक सौष्ठव का मूल्यांकन कर सकेंगे।
4. हिन्दी की जातीय चेतना के विकास में हिन्दी निबंध की भूमिका को रेखांकित कर सकेंगे।

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

इलेक्टिव कोर कोर्स (वैकल्पिक प्रश्नपत्र)
HIN A01 – A06 में से किन्हीं 3 का चयन करें
A04 : स्त्री साहित्य

पूर्णांक : 100

इकाई 1. स्त्री विमर्श और स्त्री साहित्य : अवधारणा और सरोकार
स्त्रीवाद और स्त्री मुक्ति आंदोलन : ऐतिहासिक रूपरेखा
भारतीय सामाजिक संरचना और स्त्री प्रश्न
हिन्दी साहित्य परम्परा में स्त्री अस्मिता एवं मुक्ति के प्रश्न

इकाई 2. निबंध
शृंखला की कडियां – महादेवी वर्मा

इकाई 3. उपन्यास
कठगुलाब – मृदुला गर्ग

इकाई 4. कहानी
यही सच है – मन्नू भंडारी
आपकी छोटी लड़की – ममता कालिया
बसुमती की चिट्ठी – मैत्रेयी पुष्पा
आवाज – चंन्द्रकान्ता
यूटोपिया – वंदना राग

नाटक
नेपथ्य राग – मीरा कांत

इकाई 5 कविता
सात भाइयों के बीच चम्पा, हॉकी खेलती लडकियां, रात के संतरी की कविता,
अपराजिता, मां के लिए एक कविता – कात्यायनी
स्त्रियां, आम्रपाली, नमक, एक औरत का पहला राजकीय प्रवास
प्रेम के लिए फांसी : 1, 2 – अनामिका
सच्ची कविता के लिए, मैं किसकी औरत हूँ, स्वप्न समय,
मनोकामनाओं जैसी स्त्रियां – सविता सिंह
स्त्री विमर्श, उलटबांसी, पेड़ों का शहर, चिड़िया की आंख से – नीलेश रघुवंशी
धूप तो कब की जा चुकी है, यहीं कहीं था घर, सन्नाटे का संगीत,
जिन्हें वे संजोकर रखना चाहती थी, अकेली औरत का हंसना – सुधा अरोड़ा

अंक विभाजन–

चार व्याख्याएं – इकाई 2,3,4,5 से (आन्तरिक विकल्प देय) $(10 \times 4 = 40)$
चार आलोचनात्मक प्रश्न (आन्तरिक विकल्प देय) $(15 \times 4 = 60)$

अनुशंसित ग्रंथ–

1. स्त्री संघर्ष का इतिहास – राधा कुमार, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
2. हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास – सुमन राजे, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली
3. हिन्दी कविता में स्त्री स्वर – सुनीता गुप्ता, नयी किताब, नई दिल्ली
4. नवजागरण और महादेवी वर्मा का रचनाकर्म : स्त्री विमर्श के स्वर – कृष्णदत्त पालीवाल, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली
5. स्त्री स्वप्न और संकल्प – रोहिणी अग्रवाल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
6. स्त्री विमर्श : भारतीय परिप्रेक्ष्य – के.एम. मालती, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

अधिगम उद्देश्य

1. स्त्री विमर्श की अवधारणा और सरोकार का ज्ञान कराना।
2. स्त्रीवाद और स्त्री मुक्ति आंदोलन की ऐतिहासिक रूपरेखा को स्पष्ट करना।
3. हिन्दी साहित्य परम्परा में स्त्री अस्मिता एवं स्त्री–मुक्ति परम्परा में स्त्री अस्मिता एवं स्त्री–मुक्ति के सवालों की परम्परा का उद्घाटन करना।
4. हिन्दी निबंन्ध, उपन्यास, कहानी, नाटक और कविता आदि विधाओं की प्रतिनिधि रचनाओं के द्वारा स्त्री विमर्श के व्यावहारिक स्वरूप का बोध कराना।

पाठ्यक्रम प्रतिफल

1. विद्यार्थी लैंगिक भेदभाव की व्यर्थता को समझ कर संवेदनशील बन सकेंगे
2. विद्यार्थी स्त्री की पीड़ा और उसकी भावनाओं को समझकर लैंगिक समानता की स्थापना के लिए अग्रसर होंगे।
3. विद्यार्थी स्त्री विमर्श के बुनियादी सवालों को समझकर उनकी व्याख्या कर सकेंगे।
4. विद्यार्थी स्वयं स्त्री की पीड़ा और इच्छाओं को साहित्यिक अभिव्यक्ति दे सकेंगे।

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

इलेक्टिव कोर कोर्स (वैकल्पिक प्रश्नपत्र)

HIN A01 – A06 में से किन्हीं 3 का चयन करें

A05 : मास मीडिया

पूर्णांक : 100

इकाई 1. भारत में प्रेस तथा सामचार एजेंसियों का उद्‌भव
भारतीय प्रेस और स्वतंत्रता आन्दोलन
स्वातंत्र्योत्तर भारतीय प्रेस
भारतीय प्रेस – समस्याएं और समाधान

इकाई 2. जनसंचार माध्यम के रूप में रेडियो का विकास
रेडियो प्रसारण की नयी दिशाएँ
एफ.एम. रेडियो तथा निजी प्रयास

इकाई 3. जनसंचार माध्यम के रूप में टेलीविजन का विकास
भारत में टेलीविजन की लोकप्रियता
सैटेलाइट और केबल टेलीविजन का विस्तार

इकाई 4. जनसंचार माध्यम के रूप में सिनेमा
हिन्दी सिनेमा का उद्‌भव और विकास
स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी सिनेमा – दिशाएँ और समस्याएँ

इकाई 5. जनसंचार माध्यमों की पहुंच और विकास
इन्टरनेट, ऑन लाईन संचार, आधुनिक तकनीक और संचार

अंक विभाजन–

चार निबंधात्मक प्रश्न – प्रत्येक इकाई से एक (आन्तरिक विकल्प देय)	$(20 \times 4 = 80)$
एक टिप्पणी परक प्रश्न (दो टिप्पणियां, विकल्प देय)	$(10 \times 2 = 20)$

अनुशंसित ग्रंथ–

1. मीडिया एवं सूचना प्रौद्योगिकी कोश – रमेश जैन तथा कैलाश शर्मा, पंचशील प्रकाशन, जयपुर
2. प्रेस विधि : डॉ. नंदकिशोर त्रिखा, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
3. हिन्दी पत्रकारिता : स्वरूप और आयाम – राधेश्याम शर्मा, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला
4. मीडिया प्रबंधन के सांस्कृतिक आयाम – टी.डी.एस. आलोक, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
5. मीडिया और मुद्दे – नवीन जोशी, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली
6. Indias Communication : Revolution from Bullock Carts to Cyber Merits – Arvind Singhal and Eversett M. Rogers, Sage Publications, New Delhi
7. Broadcasting in India – P.C. Benerjee, Sage Publications, New Delhi
8. Radio and T.V. Journalism – K.M. Shrivastava, Sterling Publications, New Delhi

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

अधिगम उद्देश्य

1. भारत में प्रेस तथा समाचार एजेंसियों के उद्भव, विकास और कार्यप्रणाली का अभिज्ञान कराना।
2. स्वतंत्रता आंदोलन में प्रेस की भूमिका से सुपरिचित कराना।
3. लोकतांत्रिक समाज में जनसंचार माध्यमों और स्वतंत्र प्रेस के महत्व को उजागर करना।
4. जनसंचार के आधुनिक माध्यमों–रेडियो, टेलीविजन, सिनेमा, इंटरनेट की शक्तियों, सीमाओं और कार्य प्रणाली का व्यावहारिक ज्ञान कराना।

पाठ्यक्रम प्रतिफल

1. विद्यार्थी आजादी के आंदोलन में प्रेस की भूमिका का मूल्यांकन कर सकेंगे।
2. लोकतांत्रिक राज्य और समाज के निर्माण में स्वतंत्र प्रेस और जनसंचार माध्यमों की अहमियत समझ सकेंगे।
3. जनसंचार के नवीन माध्यमों की उपयोगिता और कमियों की पहचान कर सकेंगे।
4. स्वतंत्रतापूर्व और स्वातंत्र्योत्तर प्रेस के स्वरूप, भूमिका और कार्यप्रणाली में आए बदलावों को समझ कर स्वतंत्र प्रेस की स्थापना पर सुझाव दे सकेंगे

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

एम.ए (हिन्दी) – तृतीय सेमेस्टर
इलेक्टिव कोर कोर्स (वैकल्पिक प्रश्नपत्र)
HIN A01 – A06 में से किन्हीं 3 का चयन करें
A06 : प्रेमचन्द

पूर्णांक : 100

इकाई 1.
उपन्यास – रंगभूमि

इकाई 2.
नाटक – कर्बला

इकाई 3.
कहानी – प्रतिनिधि कहानियाँ : प्रेमचंद (संपादक – भीष्म साहनी)

इकाई 4.
निबंध – साहित्य का उद्देश्य

अंक विभाजन–

चार व्याख्याएं (आन्तरिक विकल्प देय)	$(10 \times 4 = 40)$
चार आलोचनात्मक प्रश्न (आन्तरिक विकल्प देय)	$(15 \times 4 = 60)$

सभी इकाई से व्याख्या एवं प्रश्न अपेक्षित है।

अनुशंसित ग्रंथ–

1. प्रेमचंद और उनका युग – रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
2. प्रेमचंद और सौन्दर्यशास्त्र – नंदकिशोर नवल, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
3. प्रेमचंद और भारतीय समाज – नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
4. प्रेमचंद : विगत महत्ता और वर्तमान अर्थवत्ता – सं. मुरली मनोहर प्रसाद सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
5. कमल का मजदूर – मदन गोपाल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
6. प्रेमचंद की कहानी यात्रा और भारतीयता – कमल किशोर गोयनका, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली
7. भारतीय समाज, राष्ट्रवाद और प्रेमचंद – जितेन्द्र श्रीवास्तव, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली
8. प्रेमचंद की विरासत – राजेन्द्र यादव, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली
9. प्रेमचंद एक साहित्यिक विवेचन – नंददुलारे वाजपेयी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
10. प्रेमचंद : विरासत का सवाल – शिवकुमार मिश्र वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

अधिगम उद्देश्य

1. हिन्दी साहित्य में प्रेमचन्द के महत्व का ज्ञान कराना।
2. प्रेमचन्द के साहित्य में वर्णित तत्कालीन भारतीय समाज की वास्तविक स्थिति का बोध कराना।
3. प्रेमचन्द के उपन्यासों और कहानियों में वर्णित स्वाधीनता आन्दोलन के मूल्यों की पहचान कराना।
4. प्रेमचन्द की रचनाओं के साहित्यिक–सौष्ठव का मूल्यांकन करने में सक्षम बनाना।

पाठ्यक्रम प्रतिफल

1. विद्यार्थी प्रेमचन्द की रचनाओं में निहित गहन संदेशों को हृदयंगम कर सकेंगे।
2. प्रेमचन्द के उपन्यास, नाटक, निबंध और कहानियों में व्यक्त विचारों को शोध कार्य में उपयोग कर सकेंगे
3. प्रेमचंद की रचनाओं के अध्ययन–विश्लेषण के द्वारा तत्कालीन भारतीय समाज में व्याप्त विसंगतियों को समझ सकेंगे।
4. प्रेमचंद के साहित्यिक कौशल का अवबोध कर अन्य समकालीन साहित्यकारों से तुलना कर सकेंगे

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

कम्पलसरी कोर कोर्स

HIN 401. हिन्दी साहित्य का इतिहास – आधुनिक काल

पूर्णांक : 100

इकाई 1.

आधुनिक काल की पृष्ठभूमि
आधुनिकता का उन्मेष एवं तत्कालीन परिस्थितियाँ
आधुनिक काल में साहित्य की नयी प्रवृत्तियां का उदय
भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, राष्ट्रीय काव्यधारा : प्रमुख साहित्यिक प्रवृत्तियाँ

इकाई 2.

छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नयी कविता एवं स्वातंत्र्योत्तर कविता : साहित्यिक प्रवृत्तियों का अध्ययन

इकाई 3.

आधुनिक कथा साहित्य : उद्‌भव और विकास
कहानी और उपन्यास

इकाई 4.

कथेतर गद्य की प्रमुख विधाएँ : उद्‌भव और विकास
नाटक, निबंध, आलोचना, संस्मरण, रेखाचित्र, आत्मकथा

इकाई 5.

आधुनिक विमर्श और हिन्दी साहित्य
उत्तर आधुनिकता, भूमण्डलीकरण, हाशिए की वैचारिकी और साहित्य

अंक विभाजन–

कुल पाँच प्रश्न
चार आलोचनात्मक प्रश्न – इकाई 1–4 से (आन्तरिक विकल्प देय) $(20 \times 4 = 80)$
एक टिप्पणीपरक प्रश्न (दो टिप्पणीयां) – इकाई 5 से $(10 \times 2 = 20)$

अनुशंसित ग्रंथ–

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास – रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
2. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास – बच्च्वन सिंह, राधाकृष्णन प्रकाशन, नई दिल्ली
3. हिन्दी साहित्य का इतिहास – सं. नगेन्द्र, मयुर पेपरबैक्स, नई दिल्ली
4. हिन्दी का गद्य साहित्य – रामचन्द्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
5. आधुनिकता और हिन्दी साहित्य – इन्द्रनाथ मदान, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
6. बीसवी शताब्दी का हिन्दी साहित्य – विजयमोहन सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
7. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास – रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
8. आधुनिक साहित्य की प्रवृतियाँ – नामवर सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
9. आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास – बच्चन सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
10. हिन्दी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली – अमरनाथ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

अधिगम उद्देश्य

1. हिन्दी साहित्य के इतिहास के आधुनिककाल (1850 ई. के बाद) को स्पष्ट करना।
2. कविता, कथा साहित्य, कथेतर गद्य एवं साहित्य के विविध विमर्शों से सम्बन्धित साहित्यकारों एवं विशेषताओं को स्पष्ट करना।
3. आधुनिक साहित्यिक परिभाषिक शब्दावली एवं उनके द्वारा साहित्य विवेचन की पद्धति को स्पष्ट करना।

पाठ्यक्रम प्रतिफल

1. विद्यार्थी आधुनिक काल की पृष्ठभूमि, परिस्थिति एवं प्रवृत्तियों से अवगत हो सकेंगे।
2. विद्यार्थी कविता के विभिन्न वादों की सामान्य प्रवृत्तियों से अवगत हो सकेंगे।
3. विद्यार्थी कथेतर गद्य की विविध विधाओं एवं साहित्यकारों के साहित्य एवं विशेषताओं का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
4. विद्यार्थी साहित्य एवं समाज में प्रचलित आधुनिक विमर्शों की प्रवृत्तियों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
5. उत्तर आधुनिकता, भूमंडलीकरण आदि साहित्य की वैचारिकी का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

कम्पलसरी कोर कोर्स

HIN 402. आधुनिक काव्य–I

पूर्णांक : 100

इकाई 1.

साकेत (नवम सर्ग)	– मैथिलीशरण गुप्त

इकाई 2.

कामायनी (श्रद्धा सर्ग)	– जयशंकर प्रसाद
सरोज स्मृति	– सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

इकाई 3.

असाध्य वीणा	– सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'
ब्रह्मराक्षस, भूल गलती	– गजानन माधव मुक्तिबोध

इकाई 4.

कुरुक्षेत्र (छठा सर्ग)	– रामधारी सिंह दिनकर
कैदी और कोकिला	– माखनलाल चतुर्वेदी

अंक विभाजन–

चार व्याख्याएं (आन्तरिक विकल्प देय)	$(10 \times 4 = 40)$
चार आलोचनात्मक प्रश्न (आन्तरिक विकल्प देय)	$(15 \times 4 = 60)$

प्रत्येक इकाई से व्याख्या और प्रश्न पूछा जाना अपेक्षित है।

अनुशंसित ग्रंथ–

1. साकेत : एक अध्ययन – नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली
2. मैथिलीशरण – नंदकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
3. कामायनी : अध्ययन की समस्याएं – नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली
4. कामायनी का रचना संसार – प्रेमशंकर, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
5. प्रसाद का काव्य – प्रेमशंकर, राधाकृष्णन प्रकाशन, नई दिल्ली
6. निराला का काव्य – बच्चन सिंह, आधार प्रकाशन, पंचकूला
7. निराला : कृति से साक्षात्कार – नंदकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
8. असाध्य वीणा : पाठ और आलोचनात्मक संदर्भ – सं. छबिल कुमार मेहेर, आधार प्रकाशन, पंचकूला
9. अज्ञेय : सृजन की समग्रता – रामकमल राय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
10. दिनकर : अर्द्धनारीश्वर कवि – नंदकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
11. मुक्तिबोध : ज्ञान और संवेदना – नंदकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

अधिगम उद्देश्य

1. हिन्दी साहित्य के आधुनिक इतिहास के विविध कवियों का आलोचनात्मक अध्ययन।
2. हिन्दी साहित्य के आधुनिककाल के विभिन्न कवियों की रचनाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।

पाठ्यक्रम प्रतिफल

1. विद्यार्थी आधुनिक हिन्दी साहित्य के साहित्यकारों का विशिष्ट ज्ञान प्राप्त कर सकेंगें।
2. विद्यार्थी आधुनिक साहित्य की प्रमुख रचनाओं का विश्लेषणात्मक ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

एम.ए (हिन्दी) – चतुर्थ सेमेस्टर
कम्पलसरी कोर कोर्स
HIN 403. आधुनिक काव्य–II

पूर्णांक : 100

इकाई 1.

हरिजन गाथा	– नागार्जुन
पटकथा	– धूमिल

इकाई 2.

सतपुड़ा के जंगल	– भवानीप्रसाद मिश्र
कुआनो नदी	– सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

इकाई 3.

समय देवता	– नरेश मेहता
तालस्तॉय और साइकिल	– केदारनाथ सिंह

इकाई 4.

हॉकी खेलती लड़कियां, सात भाइयों के बीच चम्पा	– कात्यायनी
मां के लिए एक कविता	
आम्रपाली, नायिका भेद, अमीर खुसरो, स्त्रियां, नमक	– अनामिका

अंक विभाजन–

चार व्याख्याएं (आन्तरिक विकल्प देय)	$(10 \times 4 = 40)$
चार आलोचनात्मक प्रश्न (आन्तरिक विकल्प देय)	$(15 \times 4 = 60)$

प्रत्येक इकाई से व्याख्या और प्रश्न पूछा जाना अपेक्षित है।

अनुशंसित ग्रंथ–

1. हिन्दी कविता का इतिहास – रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
2. कविता के नये प्रतिमान – नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
3. नागार्जुन की कविता – अजय तिवारी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
4. धूमिल और उसका काव्य संघर्ष – ब्रह्मदेव मिश्र, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
5. धूमकेतु धूमिल और साठोत्तरी कविता – मीनाक्षी जोशी राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
6. नरेश मेहता : कविता की ऊर्ध्व यात्रा – रामकमल राय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
7. भवानी प्रसाद मिश्र का काव्य संसार – कृष्णदत्त पालीवाल, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
8. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का रचना कर्म – कृष्णदत्त पालीवाल, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
9. हिन्दी की लम्बी कविताओं का आलोचनात्मक पक्ष – राजेन्द्र प्रसाद सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
10. समकालीन काव्ययात्रा – नंदकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
11. समकालीन हिन्दी कविता – विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
12. कविता का स्त्री पक्ष – प्रमिला के.पी., जवाहर पुस्तक सदन, मथुरा
13. अनामिका : एक मूल्यांकन सं. अभिषेक कश्यप, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

अधिगम उद्देश्य

1. हिन्दी साहित्य के आधुनिक इतिहास विशेष रूप से समकालीन कविता के विभिन्न कवि/कवयित्रियों का आलोचनात्मक अध्ययन करना।
2. हिन्दी साहित्य के आधुनिक इतिहास विशेष रूप से समकालीन कविता की विभिन्न रचनाओं का विश्लेषण करना।
3. हिन्दी साहित्य की समकालीन कवयित्रियों की रचनाओं का विवेचनात्मक अध्ययन करना।

पाठ्यक्रम प्रतिफल

1. विद्यार्थी हिन्दी साहित्य के आधुनिक इतिहास विशेष रूप से समकालीन कविता के विभिन्न कवि एवं कवयित्रियों का आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
2. हिन्दी साहित्य की समकालीन कवयित्रियों की रचनाओं के विविध पक्षों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
3. विद्यार्थी हिन्दी साहित्य के आधुनिक इतिहास विशेष रूप से समकालीन कविता की विभिन्न रचनाओं के विविध पक्षों का विश्लेषनात्मक ज्ञान प्राप्त करना।

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

एम.ए (हिन्दी) – चतुर्थ सेमेस्टर
इलेक्टिव कोर कोर्स (वैकल्पिक प्रश्नपत्र)
HIN A01 – A06 में से किन्हीं 3 का चयन करें
A01 : हिन्दी उपन्यास

पूर्णांक : 100

* हिन्दी उपन्यास का उद्‌भव और विकास
* निर्धारित पाठ –
  1. गोदान – प्रेमचन्द
  2. मैला आँचल – फणीश्वरनाथ रेणु
  3. शेखर – एक जीवनी (भाग 1, 2) – सच्चिदानंद हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'
  4. दिव्या – यशपाल

अंक विभाजन–

चार व्याख्याएं $(10 \times 4 = 40)$
चार आलोचनात्मक प्रश्न $(15 \times 4 = 60)$
प्रत्येक उपन्यास से व्याख्या और प्रश्न पूछा जाना अपेक्षित है।

अनुशंसित ग्रंथ–

1. हिन्दी उपन्यास का इतिहास – गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
2. उपन्यास की संरचना – गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
3. हिन्दी उपन्यास का विकास – मधुरेश, लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली
4. गोदान : नया परिप्रेक्ष्य – गोपाल राय, अनुपम प्रकाशन, पटना
5. गोदान का महत्व – सं. सत्यप्रकाश मिश्र, नई कहानी प्रकाशन, इलाहाबाद
6. मैला आँचल : वाद–विवाद – सं. भारत यायावर, आधार प्रकाशन, पंचकूला
7. मैला आँचल का महत्व – सं. मधुरेश, सुमित प्रकाशन, इलाहाबाद
8. अज्ञेय और उनका कथा साहित्य – गोपाल राय, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
9. शेखर एक जीवनी : विविध आयाम – सं. रामकमल राय, अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद
10. यशपाल : रचनात्मक पुनर्वास – मधुरेश, आधार प्रकाशन, पंचकूला

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

अधिगम उद्देश्य

1. हिन्दी साहित्य की गद्य विद्या–उपन्यास के उद्भव एवं विकास को स्पष्ट करना।
2. हिन्दी साहित्य के प्रमुख उपन्यासों का विवेचनात्मक अध्ययन करना।
3. हिन्दी साहित्य के प्रमुख उपन्यासकारों का आलोचनात्मक अध्ययन करना।

पाठ्यक्रम प्रतिफल

1. विद्यार्थी हिन्दी साहित्य की गद्य विद्या–उपन्यास के उद्भव एवं विकास का ज्ञान प्राप्त कर सकेगें।
2. हिन्दी साहित्य के प्रमुख उपन्यासकारों का आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे
3. हिन्दी साहित्य के प्रमुख उपन्यासों का विवेचनात्मक ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

इलेक्टिव कोर कोर्स (वैकल्पिक प्रश्नपत्र)

HIN A01 – A06 में से किन्हीं 3 का चयन करें

A02 : हिन्दी आलोचना

इकाई 1.

* हिन्दी आलोचना का उद्‌भव एवं विकास
* प्रमुख आलोचक और उनके आलोचना सिद्धान्त
  1. रामचन्द्र शुक्ल
  2. हजारीप्रसाद द्विवेदी
  3. डॉ. नगेन्द्र
  4. नंददुलारे वाजपेयी
  5. रामविलास शर्मा
  6. गजानन माधव मुक्तिबोध
  7. रामस्वरूप चतुर्वेदी

इकाई 2.

रचनाकार समीक्षक

प्रेमचंद, रामधारी सिंह दिनकर, विजयदेव नारायण साही, सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'

अंक विभाजन–

कुल पाँच प्रश्न

चार निबंधात्मक प्रश्न – इकाई 1 से (आन्तरिक विकल्प देय)	$(20 \times 4 = 80)$
एक टिप्पणीपरक प्रश्न (दो टिप्पणीयां) – इकाई 2 से (विकल्प देय)	$(10 \times 2 = 20)$

अनुशंसित ग्रंथ–

1. हिन्दी आलोचना – विश्वनाथ त्रिपाठी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
2. हिन्दी आलोचना का विकास – नंदकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
3. हिन्दी आलोचना : शिखरों का साक्षात्कार – रामचन्द्र तिवारी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
4. आलोचक और आलोचना – कमला प्रसाद, आधार प्रकाशन, पंचकूला
5. हिन्दी आलोचना का दूसरा पाठ – निर्मला जैन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
6. हिन्दी आलोचना का विकास – मधुरेश, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
7. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और हिन्दी आलोचना – रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
8. हिन्दी के रचनात्मक आलोचक – योगेश प्रताप शेखर, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली
9. दूसरी परम्परा की खोज – नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
10. आलोचक और आलोचना सिद्धान्त – रतन कुमार पाण्डेय, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

अधिगम उद्देश्य

1. हिन्दी साहित्य के आलोचना साहित्य का अध्ययन करना।
2. हिन्दी के प्रमुख आलोचक एंव उनके आलोचना सिद्धान्त का ज्ञान कराना।
3. हिन्दी साहित्य के प्रमुख रचनाकार समीक्षकों का आलोचनात्मक अध्ययन करना।

पाठ्यक्रम प्रतिफल

1. विद्यार्थी हिन्दी के आलोचना साहित्य से परिचित होगें।
2. विद्यार्थी हिन्दी के प्रमुख आलोचक एवं आलोचना सिद्धान्त का विवेचनात्मक ज्ञान प्राप्त कर सकेगें।
3. विद्यार्थी हिन्दी साहित्य के प्रमुख रचनाकार समीक्षा को का विवेचनात्मक ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

एम.ए (हिन्दी) – चतुर्थ सेमेस्टर
इलेक्टिव कोर कोर्स (वैकल्पिक प्रश्नपत्र)
HIN A01 – A06 में से किन्हीं 3 का चयन करें
A03 : कथेतर गद्य विधाएं

* हिन्दी गद्य का विकास
* हिन्दी गद्य की विभिन्न विधाएं – संस्मरण, रेखाचित्र, यात्रावृत्त, रिपोर्ताज, जीवनी, आत्मकथा, डायरी, साक्षात्कार

इकाई 1.

संस्मरण – दंतकथाओं में त्रिलोचन : काशीनाथ सिंह

रेखाचित्र – चीनी फेरीवाला : महादेवी वर्मा

इकाई 2.

यात्रावृत्त – चीड़ों पर चाँदनी : निर्मल वर्मा

रिपोर्ताज – ऋणजल – धनजल : फणीश्वरनाथ रेणु

इकाई 3.

जीवनी – आवारा मसीहा (प्रथम एवं द्वितीय पर्व) : विष्णु प्रभाकर

आत्मकथा – अपनी खबर : पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'

इकाई 4.

डायरी – हँसते हुए मेरा अकेलापन : मजयज

साक्षात्कार – हजारी प्रसाद द्विवेदी से मनोहर श्याम जोशी का साक्षात्कार

अंक विभाजन–

चार व्याख्याएं (आन्तरिक विकल्प देय)	$(10 \times 4 = 40)$
चार आलोचनात्मक प्रश्न (आन्तरिक विकल्प देय)	$(15 \times 4 = 60)$

प्रत्येक इकाई से व्याख्या और प्रश्न पूछा जाना अपेक्षित है।

अनुशंसित ग्रंथ–

1. हिन्दी का गद्य साहित्य – रामचन्द्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
2. आधुनिक हिन्दी गद्य साहित्य का विकास और विश्लेषण – विजयमोहन सिंह, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली
3. हिन्दी गद्य विन्यास और विकास – रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
4. साहित्य विधाओं की प्रकृति – सं. देवीशंकर अवस्थी, राधाकृष्णन प्रकाशन, नई दिल्ली
5. बीसवीं शताब्दी का हिन्दी साहित्य – सं. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली
6. साहित्यिक विधाएं : पुनर्विचार – हरिमोहन वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

अधिगम उद्देश्य

1. हिन्दी साहित्य के गद्य साहित्य के विकास का विवेचनात्मक अध्ययन करना।
2. कथेतर गद्य की विविध विधाओं का विकासात्मक एवं आलोचनात्मक अध्ययन करना।
3. हिन्दी साहित्य के प्रमुख कथेतर गद्य साहित्य के साहित्यकारों का आलोचनात्मक अध्ययन करना।

पाठ्यक्रम प्रतिफल

1. विद्यार्थी हिन्दी गद्य साहित्य के उद्भव एवं विकास से परिचित हो सकेंगें
2. विद्यार्थी कथेतर गद्य की विविध विधाओं का आलोचनात्मक ज्ञान कर सकेंगें।
3. विद्यार्थी हिन्दी साहित्य के प्रमुख कथेतर गद्य साहित्यकारों के विवेचनात्मक ज्ञान से परिचित हो सकेंगे।

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

इलेक्टिव कोर कोर्स (वैकल्पिक प्रश्नपत्र)

HIN A01 – A06 में से किन्हीं 3 का चयन करें

A04 : दलित साहित्य

पूर्णांक : 100

इकाई 1. दलित का आशय, दलित साहित्य की अवधारणा एवं सरोकार
दलित साहित्य आंदोलन के उदय की पृष्ठभूमि
मराठी दलित आंदोलन, हिन्दी दलित आंदोलन
दलित साहित्य की सैद्धांतिकी : बौद्ध धम्म एवं दर्शन, फुले–अम्बेडकरवाद, अस्मितावाद और दलित सौन्दर्यशास्त्र
दलित साहित्य की प्रमुख विधाएं एवं रचनाकार

इकाई 2. आत्मकथा
मुर्दहिया – तुलसीराम

इकाई 3. उपन्यास
छप्पर – जयप्रकाश कर्दम

इकाई 4. कहानी
पच्चीसा चौका डेढ़ सौ – ओमप्रकाश वाल्मीकि
बदबू – सूरजपाल चौहान
घालय शहर की एक बस्ती – मोहनदास नैमिशराय
सिलिया – सुशीला टाकभौरे
पटकथा – अजय नावरिया

नाटक
वीमा – रत्नकुमार सांभरिया

इकाई 5. कविता
अछूत की शिकायत – हीरा होम
ठाकुर का कुंआ, शायद आप जानते हो – ओमप्रकाश वाल्मीकि
शम्बूक, तब तुम्हारी निष्ठा क्या होती – कंवल भारती
सुनो ब्राह्मण, हमारे गांव में – मलखान सिंह
पंख मेरे फड़फड़ाते हैं, सपने सज जायेंगे – सुशीला टाकभौरे

अंक विभाजन–

चार व्याख्याएं – इकाई 1, 3, 4, 5 से (आन्तरिक विकल्प देय) $(10 \times 4 = 40)$
चार आलोचनात्मक प्रश्न (आन्तरिक विकल्प देय) $(15 \times 4 = 60)$

अनुशंसित ग्रंथ–

1. दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र – शरणकुमार लिंबाले, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
2. दलित साहित्य के प्रतिमान – डॉ. एन. सिंह, वााणी प्रकाशन, नई दिल्ली
3. दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र – ओमप्रकाश वाल्मीकि, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
4. दलित साहित्य का समाजशास्त्र – हरिनारायण ठाकुर, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली
5. हिन्दी दलित साहित्य : एक मूल्यांकन – सं. प्रमोद कोवप्रत, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
6. दलित साहित्य : बुनियादी सरोकार – कृष्णदत्त पालीवाल, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
7. दलित साहित्य : एक अंतर्यात्रा – बजरंग बिहारी तिवारी, नवारूण प्रकाशन, नई दिल्ली

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

अधिगम उद्देश्य

1. दलित साहित्य की सैद्धान्तिकी का अध्ययन करना।
2. दलित साहित्य आंदोलन एवं उदय के कारणों को स्पष्ट करना।
3. मराठी एवं हिन्दी दलित आंदोलन का विकासात्मक अध्ययन करना।
4. हिन्दी साहित्य के प्रमुख दलित साहित्यकारों एवं साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन करना।

पाठ्यक्रम प्रतिफल

1. विद्यार्थी दलित साहित्य की सैद्धान्तिकी का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे
2. दलित साहित्य आंदोलन एवं उदय के कारणों का ज्ञान प्राप्त कर सकेगें।
3. मराठी एवं दलित आंदोलन का विकासात्मक ज्ञान प्राप्त कर सकेगें।
4. हिन्दी साहित्य के प्रमुख दलित साहित्यकारों एवं साहित्य का आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

इलेक्टिव कोर कोर्स (वैकल्पिक प्रश्नपत्र)

HIN A01 – A06 में से किन्हीं 3 का चयन करें

A05 : भाषा प्रौद्योगिकी

पूर्णांक : 100

इकाई 1.

- हार्डवेयर एवं सॉफ्टवेयर की सामान्य परिचय
- संगणंक (Computer) की बनावट तथा कार्यप्रणाली का अध्ययन

इकाई 2.

- भाषा प्रौद्योगिकी – अर्थ, स्वरूप और कार्य
- संगणक साधित हिन्दी भाषा प्रौद्योगिकी

इकाई 3.

- मानक हिन्दी यूनिकोड –नोट पैड, वर्ड पैड, फॉण्ड तथा मुद्रण संबंधी सुविधाएं
- यूनीकोड में परिवर्तन संबंधी सॉफ्टवेयर

इकाई 4.

- विविध हिन्दी सॉफ्टवेयर तथा फॉण्ट में टंकण
- भारतीय भाषाओं के सॉफ्टवेयरों का अध्ययन

इकाई 5.

- इण्टरनेट और हिन्दी
- ई–मेल, नेटवर्क अभियांत्रिकी
- वेब डिजाइनिंग, ब्लॉग लेखन, ऑडियो–वीडियो सम्पादन, वेबसाइट निर्माण

अंक विभाजन–

चार निबंधात्मक प्रश्न – इकाई 1,2,3,4 से (आन्तरिक विकल्प देय)	$(20 \times 4 = 80)$
एक टिप्पणीपरक प्रश्न (दो टिप्पणियां) – इकाई 5 से	$(15 \times 4 = 20)$

अनुशंसित ग्रंथ–

1. भाषा और प्रौद्योगिकी – डॉ. विनोद प्रसाद, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
2. भाषा प्रौद्योगिकी – डॉ. सूर्य प्रसाद दीक्षित, किताबधर प्रकाशन, नई दिल्ली
3. कम्प्यूटर के भाषिक अनुप्रयोग – डॉ. विजयकुमार मल्होत्रा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
4. कम्प्यूटर सूचना प्रणाली विकास – रामबंस विज्ञानाचार्य, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

अधिगम उद्देश्य

1. भाषा प्रौद्योगिकी के विभिन्न अंशों की समझ विकसित करना
2. संगणक के सामान्य सिद्धान्तों का ज्ञान प्राप्त करना।
3. इण्टरनेट और वेबसाइट की जानकारी प्राप्त करना।
4. तकनीक और भाषा में समन्वय की संभव दक्षता प्राप्त करना।

पाठ्यक्रम प्रतिफल

1. भाषा प्रौद्योगिकी की विभिन्न तकनीकों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगें
2. भाषा के प्रयुक्त होने वाले सॉफ्टवेयरों को सीख सकेंगे
3. ई–मेल, बेब डिजाइनिंग इत्यादि की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे
4. तकनीक के सहारे भाषा के अद्यतन होने को सीख सकेंगे।

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

इलेक्टिव कोर कोर्स (वैकल्पिक प्रश्नपत्र)

HIN A01 – A06 में से किन्हीं 3 का चयन करें

A06 : आधुनिक भारतीय साहित्य

इकाई 1.

क. भारतीयता और भारतीय साहित्य की अवधारणा
भारतीय साहित्य की आधारभूत विशेषताएं
भारतीय साहित्य के अध्ययन की समस्याएं

ख. आधुनिकता और भारतीय साहित्य
आधुनिक भारतीय उपन्यास : सामान्य परिचय
आधुनिक भारतीय कविता : सामान्य परिचय
आधुनिक भारतीय नाटक : सामान्य परिचय

इकाई 2.

ययाति (उपन्यास) – विष्णु सखाराम खाण्डेकर

इकाई 3.

गीतांजलि (काव्य) – रवीन्द्रनाथ टैगोर

इकाई 4.

हयवदन (नाटक) – गिरीश कर्नाड

अंक विभाजन–

तीन व्याख्याएं (आन्तरिक विकल्प देय)	$(10 \times 3 = 30)$
चार आलोचनात्मक प्रश्न (प्रत्येक इकाई से)	$(15 \times 4 = 60)$
एक टिप्पणीपरक प्रश्न (इकाई 1. ख से)	$(10 \times 1 = 10)$

अनुशंसित ग्रंथ–

1. भारतीय साहित्य : स्थापनाएं और प्रस्तावनाएं – के. सच्चिदानंदन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
2. भारतीय साहित्य की भूमिका – रामविलास शर्मा राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
3. भारतीय साहित्य – लक्ष्मीकांत पाण्डेय, प्रमिला अवस्थी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
4. भारतीय साहित्य – डॉ. नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली
5. भारतीय साहित्य के नये क्षितिज – रोहिताश्व, शिल्पायन, नई दिल्ली
6. भारतीय चिंतन की परम्परा – के. दामोदरन, पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली
7. भारतीय साहित्य – मूलचंद गौतम, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

अधिगम उद्देश्य

1. आधुनिकता और भारतीयता की अवधारणा समझना।
2. भारतीयता की विशिष्टताओं को रेखाकिंत करना।
3. भारतीय साहित्य में अन्तःसूत्रों की पहचान करना।
4. भारतीय जनमानस की सांस्कृतिक विशेषताओं की पड़ताल करना।

पाठ्यक्रम प्रतिफल

1. भारतीय उपमहाद्वीप की साहित्यिक विशिष्टताओं को जान सकेंगे
2. विभिन्न प्रदेशों के साहित्य की सामान्य प्रवृत्तियों को जान सकेंगे
3. महाराष्ट्र, बंगाल और कर्नाटक के साहित्य का गहन अध्ययन कर सकेंगे
4. साहित्य में मानवीय मूल्यों का महत्व समझ सकेंगे

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR